चौथा अध्याय

उदय प्रकाश की रचनाओं में व्यक्ति और व्यवस्था

चौथा अध्याय
उदय प्रकाश की रचनाओं में व्यक्ति और व्यवस्था

4.1 व्यक्ति और व्यवस्था

जंगल से शुरू होकर मानव की कहानी विकास एवं सभ्यता में तैरकर परस्पर स्नेह, मित्रता, मनुष्यता, आचार विचार एवं रुचियों में संतुलित एक नयी रूप में परिणित हुई। यह नयी परिणिति है 'समाज'। डॉ. हेतु भरद्वाज का विचार यहाँ उल्लेखनीय है - "समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है जिनकी समान आदतें हैं, जिनकी समान रुचियाँ हैं, समान विचार उन्हें संगठित रखने के लिए पर्याप्त है।"[1] समाज से व्यक्ति को अन्याय से लडने एवं संगठित करने का ऊर्जा मिलता है। समाज से प्राप्त इस ऊर्जा के तहत मानव भविष्य की ओर बढने लगा। परंपरा से अर्जित यह ऊर्जा हमारे मन में सुरक्षित है। इसलिए हम भविष्य के प्रति उत्सुक होकर, अतीत के प्रति चिंतित होकर वर्तमान में जी रहे हैं।

भारतीय परंपरा के अनुसार व्यक्ति का अपना 'स्व' का महत्व सिर्फ वानप्रस्थ एवं सन्यास में मात्र था। व्यवस्था के बडे हिस्से जैसे परिवार, राजनीति, आर्थिक व्यवस्था एवं धार्मिक व्यवस्था की एक कडी मात्र व्यक्ति था। व्यक्ति को

---

1. डॉ. हेतु भरद्वाज - स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिभा - पृ. 19

अपनी अस्मिता के लिए लडने की आवश्यकता पुराने ज़माने में नहीं था। समाज, परिवार, राजनीति, आर्थिक व्यवस्था, धर्म आदि उनके अस्तित्व के हिस्से थे। लेकिन आज का युग बेहद विडम्बनापूर्ण है। जीवन के समस्त स्तरों में परिवर्तन आ गया। फलस्वरूप व्यक्ति की पहचान केन्द्रीय धुरी में परिणित हुई। अर्थात व्यक्ति राष्ट्र एवं समाज की स्वस्थ इकाई बन गया।

समाज शास्त्रियों ने व्यक्ति एवं व्यवस्था के आत्मीय संबन्ध को ढूँढने का प्रयत्न किया है। इसके तहत उन्होंने समझ लिया है कि व्यवस्था का रूप सीधे सामने नहीं आता। राजनीति, धार्मिक, सांस्कृतिक संबन्ध, आर्थिक रूप आदि संस्थाबद्ध रूप में सामने आते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो राजनीति, समाज, न्याय प्रणाली, धर्म, अर्थ तंत्र आदि व्यवस्था के विभिन्न रूप ही हैं। इसी से हमें पता चलता है कि व्यवस्था के लिए एक व्यापक, सामाजिक स्वीकृति की अनिवार्यता होती है। व्यक्ति की भावनाएँ, संस्कार, मूल्य संबन्ध जब केवल उस तक सीमित नहीं रहते बल्कि उनके कुछ मान्य सामाजिक ढाँचे सामने आने लगते हैं तो उन्हीं में से व्यवस्था का स्वरूप उभरता है। समाज और व्यवस्था में इस दृष्टि से अंतर अवश्य रहता है कि जहाँ समाज में अनेक प्रकार के संबन्ध और मूल्य विद्यमान रहते हैं। वहाँ व्यवस्था में उनका संस्थाबद्ध रूप ही दिखाई पडता है। व्यवस्था की सामाजिक स्वीकृति में एकता की ज़रूरत होती है। आज एकता गायब हुई। फलस्वरूप व्यवस्था में दो वर्ग उभर कर आये हैं। एक वर्ग में व्यवस्था की सारी शक्ति केंद्रित है और दूसरा वर्ग व्यवस्था में छटपटा रहा है। दूसरा वर्ग मुक्ति का

कामना करता है। इस प्रकार देखा जाये तो किसी एक वर्ग की आशा-आकांक्षा से जुडी कोई व्यवस्था पूर्ण नहीं हो सकती। व्यवस्था की इसी कमी का पर्दाफाश समकालीन रचना का विषय है। क्योंकि व्यक्ति एवं व्यवस्था के बीच आज दूरी हो गई। इसी में साधारण जनता की अस्मिता एवं स्वतंत्रता खो गयी। खोयी हुई अस्मिता एवं स्वतंत्रता की तलाश आज के रचनाकार कर रहे हैं।

व्यवस्था विरोधी स्वर उदय साहित्य का मर्म है। मानव के सारे सपने चकनाचूर करनेवाली भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति उदय जी ने प्रतिरोध किया है। भारत की व्यवस्था लोकतंत्रीय व्यवस्था है। यहाँ प्रत्येक का अपना अधिकार है। प्रजा द्वारा प्रजा के लिए प्रजा से चुने हुए शासकों द्वारा यहाँ शासन चल रहा है। लेकिन ये शासक राजनैतिक दलों को प्रतिनिधित्व करनेवाले हैं। इस व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में न्याय व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था, राजनीति की महती भूमिका है। न्यायान्याय, अत्याचार, कर्तव्य, लक्ष्य, नीतियाँ आदि सभी को प्रकाश में लाने का दायित्व मीडिया का है। उदय प्रकाश की रचनाओं में इस व्यवस्था के आज के विचलित रूप पर प्रकाश डाला गया है। रचनाकार इस व्यवस्था के सामने कभी कभी डरे हुए से कभी उससे मिलकर जाने की कोशिश में पराजित होकर, कभी चुपचाप झेलने में विवश होकर दिखाई देते हैं तो कभी वे प्रतिरोध की आग में झुलसते हैं। उन्होंने समझ लिया कि आज की व्यवस्था भूमंडलीकृत पूँजीवाद, धर्म, जाति, पथभ्रष्ट राजनीति आदि से संचालित है। वहाँ न्याय एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ डंवाडोल हो रही हैं। वहाँ साधारण आदमी बेसहारा बनता है। लोकतंत्रीय व्यवस्था

में आदमी को स्वतंत्र होना है, लेकिन आदमी चारों ओर से घिरा हुआ है। उस भयानक स्थिति को तटस्थता से अपनी रचनाओं के ज़रिए अनावृत करने में एक संवेदनशील रचनाकार होने से वे नितांत जागरूकता दर्शाते हैं। मूलतः वे एक पत्रकार हैं। इसलिए वे खबरों को एकत्र करने और उस व्यवस्था की सच्चाई को बडी संजीदगी से पेश करने की काबिलियत रखते हैं।

4.2 लोकतांत्रिक व्यवस्था

हमारी व्यवस्था लोकतांत्रिक व्यवस्था है। वहाँ जनता ही सबसे महत्वपूर्ण कडी है। "लोकतंत्र तो स्वाभाविक रूप से आर्थिक प्रगति को तीव्र करने का तरीका नहीं है लेकिन यह श्रमिकों की कीमती पर प्रगति हासिल करने से बचने का तरीका है।"[1] अर्थात लोकतंत्र हमारी अक्सर गलती करनेवाली दुनिया में न्यायिक प्रणाली लागू करता है।

उदय प्रकाश हमारे लोकतंत्र की आज की स्थिति पर बेचैन हैं। लोकतंत्र को एक मारुति कार से उपमा करते हैं-

"राजधानी में सबसे ज़्यादा रोशनी से जगमगाती सडक पर
जब छा जायेगा आँखों के सामने अंधेरा अचानक
एक मारुति कार तेजी से स्टटि होकर गुजर जायेगी
अपराध, संस्कृति, आक्रामकता, राजनीति

---

1. चंद्रायन - अंक-2 - पृ. 64

प्रापर्टी, दलाली, सांप्रदायिकता, पत्रकारिता, हिंसा
सबका एक साथ बजता हॉनी
पूरी पृथ्वी पर गूंजता-सा लगेगा उस आखिरी पला"[1]

उदय जी के अनुसार आज हम एक ऐसे संवेदनहीन समय और सामाजिक ढाँचे में भी जी रहे हैं जिसमें पीडित एवं शोषित जनता के पक्ष में क्रान्ति करनेवाली शक्तियाँ, साझा सरकार बनाने, पेट्रोल की कीमत कम करने और गरीबों पर राज करने का शतरंज खेल रही हैं। इसी खतरनाक स्थिति पर वे 'मोहनदास' में लिखते हैं - "....ऐसा समय, जिसमें इस देश में जो भी ईमानदार था और श्रम और प्रतिभा पर ज़िंदा था, उसे मारने या कुचलने के लिए इक्कीसवीं सदी के उत्तर-औद्योगिक लोकतंत्र में अभूत पूर्व सर्वदलीय ऐतिहासिक सहमती थी....! राजनीति का कोई रूप सत्ता के ऐसे उपकरण में बदल चुका था, जिसका इस्तेमाल प्रजा के उत्पीडन, दमन और उसपर अन्यायों के लिए हो रहा था।"[2] उदय जी आज के कम्यूनिस्ट नेताओं पर परोक्ष रूप में परिहास करते हैं। आज उनका संघर्ष, संघर्ष मात्र रह गया है।

आज लोकतांत्रिक व्यवस्था में व्यक्ति सत्ता की ताकत पर झूठ को सच साबित कर सकता है। 'मोहनदास' कहानी इसका मिसाल है। असली मोहनदास को नकली मोहनदास बने विश्वनाथ को विश्वनाथ नहीं साबित कर पाया। उदय जी कहानी में इसका कारण बताते हैं - "अंग्रेज़ी द्वारा गुलाम भारत पर शासन के लिए

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम ...और पत्ते गिर रहेहैं इस तरह लगातार - पृ. 55
2. उदय प्रकाश - मोहनदास - पृ. 43

तैयार किए गए नौकरशाही के इस जंग खाए लौह-ढाँचे ने, आज़ादी के साठ साल बाद, अधिकारिक सरकारी दस्तावेज पर विश्वनाथ बल्द नगेन्द्रनाथ को मोहनदास वल्द काबा दास बना दिया।"[1] हमारी न्याय व्यवस्था भी कमज़ोर है। वहाँ आम आदमी को जगह नहीं है। प्रस्तुत कहानी के तहत उदय जी पाठकों से यह बताना चाहते हैं कि हमारी व्यवस्था ईमानदारी, न्याय एवं लोकमंगल की भावनाओं से दूर है। उदय जी 'पीली छतरीवाली लडकी' में लोकमंगल की भावना से दूर पर खडे होनेवाली राजनीति पर तीखा व्यंग्य, कार्तिकेय काजेल के द्वारा पेश करते हैं - "तुम देखना,.... अगर अभी भी कुछ नहीं हुआ तो हमारा ये देश हाइती, पनामा, कोलंबिया या दुबाई बन जाएगा। माफियाओं का यहाँ होगा और दो अक्टूबर को राजघाट पर सिर्फ वही जा पायेंगे। बाकी नागरिकों का प्रवेश वहाँ वर्जित होगा।"[2] इस प्रकार सोचनेवाले व्यक्तियों को व्यवस्था आतंकवादी घोषित करती है। उदय प्रकाश डॉ. वाकणकर से कहलवाते हैं - "उनकी आँखों में कहीं चिंता या दया के निशान नहीं थे। अगर उनमें से किसी का अपना बच्चा मर रहा होता तो क्या वे यही व्यवहार करते.... कहीं ऐसा तो नहीं कि जो तंत्र या व्यवस्था यहाँ बनी हुई है, वह अपने आप में एक समानांतर प्रणाली है? वह सिर्फ अपनी ही दुनिया की चिंताओं में व्यस्त है। शायद उसका हित ही इससे जुडा हुआ है कि लोग भूख, गरीबी, महामारी आदि से मरे।"[3] प्रस्तुत कथन से हमें ऐसा लगा कि हमारे द्वारा अपनी शत्रु-व्यवस्था का चुनाव करके, हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को हम मज़बूत

---

1. उदय प्रकाश - मोहनदास - पृ. 70
2. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 93
3. उदय प्रकाश - और अंत में प्रार्थना - पृ. 141

करते हैं। इस प्रकार हम हमारी जनतांत्रिक व्यवस्था को हास्यास्पद कर रहे हैं। देश का अंग-प्रत्यंग अनेक बीमारियों से ग्रस्त है कि वह क्षत-विक्षत हो सकता है। याने कि हमारे गणराज्य में भी पुरानी गुलामी की मानसिकताएँ और पीडाएँ हैं-

"मैं हूँ एक दर्शक फक़त
अपनी ही दुनिया और अपनी ही देह का
कई सौ अंगों का चलता फिरता एक जटिल समुच्चय
अपने इतिहास और रोगों को ढोता एक समस्याग्रस्त ढांचा
इस दिशा से उस दिशा किसी उम्मीद में किसी उन्माद में भागता-दौडता
एक उत्पीडित गुलाम गणराज्य
किसी दिन अपनी ही इच्छा था अपने ही दुःखों से निष्पंद हो जायेगा
कोई एक अंग
या हो जायेगा इतना स्वतंत्र कि तहस-नहस हो जाएंगी सारी संरचनाएँ।"[1]

उदय प्रकाश अपनी रचनाओं के द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति असंतोष ज़ाहिर करते हैं। क्योंकि आज लोकतंत्र भी मलिन हो गया। उनके चार स्तंभ भी हिल रहे हैं। उनको पुनःस्थापित करने का आह्वान भी उदय जी ने अपनी रचनाओं के द्वारा किया है।

4.3 आर्थिक व्यवस्था

'अर्थ' महत्वपूर्ण इकाई है। आर्थिक उन्नति केवल देश की आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं बल्कि समाज की व्यापक उन्नति के साथ जुडा हुआ है। इसीसे हमें

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - शरीर - पृ. 30

पता चलता है कि समाज की उन्नति एवं अवनति का मूलकारण आर्थिक संपन्नता ही है। इस पूँजी के कारण वास्तव में समूह में अमीर-गरीब का भेदभाव उत्पन्न हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले देश की आर्थिक स्थिति संबन्धी दृष्टिकोण रहा था। लेकिन 1960 के बाद नयी-नयी आर्थिक नीतियाँ यहाँ लागू हुई। गाट करार, WTO आदि की सहायता भारत में बदलाव लाने की वजह बनी। मुक्त बाज़ार की माँग यहाँ हुई। विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के ऊपर उत्पादन की माँग यहाँ हुई। विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के ऊपर उत्पादन की भरमार को दिखाकर यहाँ अपनी मंडी में बदलने का षड्यंत्र भी इसके पीछे था। बडी-बडी कंपनियों ने यहाँ से काफी लाभ कमाया। 2003 की आर्थिक परिस्थिति पर प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. वसंत पटवर्धन ने कहा है कि अर्थ उद्योग के लिए स्वाधीनता के पश्चात 2003 महत्वपूर्ण रहा है। इस वर्ष अनाज का उत्पादन बडी मात्रा में बढ गया। विदेशी मुद्रा अधिक मात्रा में बढ़ गई। बडी बडी कंपनियों ने काफी लाभ कमाया। वास्तव में डॉ. वसंत पटवर्धन की आलोचना 2017 में भी सही सिद्ध हो रही है। भारत के परंपरागत कुटीर उद्योग, खेती-बाडी आदि क्षीण हो रहा है। सरकार एकोनमी सुधार करने के लिए सब्सिडी को खत्म करने के बावजूद किसानों की आर्थिक क्षति हुई। आलोच्य रचनाकार व्यवस्था में त्रस्त मध्यवर्ग के प्रति आत्मीयता स्थापित करने के साथ आगामी पीढि को हमारे आर्थिक तंत्र से अवगत कराना चाहते हैं-

"हाँ मैं कुछ कविताएँ दे सकता हूँ
किसे पढकर

जब तुम करने लायक हो जाओगे
जब अपने लिए कुछ हासिल करने या उम्मीद
जरूर
हासिल कर सकते हो।"[1]

उनकी कविताएँ काल्पनिक न होकर वास्तविक जगत की हैं। उसमें आए अधिकांश पात्र आम आदमी हैं। आम आदमी के सामने खडा होकर उदय जी कविता के द्वारा पूँजीवाद के विरुद्ध रोष प्रकट करते हैं। समकालीन भ्रष्ट व्यवस्था को तोडने की शक्ति उनकी कविता में है। आर्थिक व्यवस्था में पिस जानेवाले आदमी को उदय जी ने कविता या कहानी में दर्शाया है। बाज़ारवादी युग में श्रम की महत्ता नहीं है। भारत के अस्सी से ज़्यादा प्रतिशत लोग खेती करते हैं। आज भी बडे बडे लोगों एवं हमोर राष्ट्र के हाथ में जो कुछ विभूति है, वह वास्तव में गाँव के किसानों एवं श्रमिकों की सदका है। लेकिन वे आज अन्न और अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ होकर जीने को मज़बूर हैं। कभी कभी कई किसान लोग आत्महत्या करने को भी विवश हो जाते हैं।

उदय जी अपनी कविताओं में आर्थिक विषमता का चित्रण करते हैं। साथ ही साथ वे व्यंग्यात्मकता के तहत प्रतिरोध तो ज़ाहिर करते हैं।

"टटराता जिसकी हर टहनी पर
उम्मीदें थीं और नये नये स्वाद

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - सामान्यतया ऐसा होता है - पृ. 21

नयी नयी छौंक में गमकते
वही या मेरी मुट्ठियों में
धीरे धीरे खनखनाता हुआ
मेरी नसों को पीकर
बडा होता।"[1]

देश की आर्थिक व्यवस्था का सही मूल्यांकन तभी होता है, जब अर्थ व्यवस्था में देश व आम जनता को ध्यान में रखा जाए। आर्थिक विषमता के कारण उदय जी अपनी कविताओं के द्वारा तलाश करते हैं। वर्गीय विषमता इसका प्रमुख कारण है। इसको वे यों उद्घाटित करते हैं-

"अस्सी प्रतिशत लोगों की आँख में
बूट और बारुद की सत्ता है
पाँच प्रतिशत लोगों के हाथों में
मनमाना राज्य
और बाकी हम जैसों के दिमाग में
राज्य सत्ता।"[2]

नयी अर्थ नीति भी हमें आतंकित कर रही है। नये नये ब्रांड बाज़ार में आ गये। इसके पीछे हम भाग रहे हैं। याने कि नयी अर्थ व्यवस्था नये समाज की संरचना का कारण बन गयी। यह एक प्रकार की पूँजी है। उदय जी का प्रतिरोध देखिए-

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - पृ. 40
2. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - राज्य सत्ता - पृ. 65

"साथियो, यह एक लुटेरा समय है
नयी अर्थ व्यवस्था की यह नयी सामाजिक संरचना है
आवारा, हिंसक पूँजी की यह एक बिलकुल नयी ताकत है
और इसमें जो कुछ भी
कहीं लोकप्रिय है
वह कोई न कोई अमरीकी ब्रांड है
गुलाम होने और गुलाम बनाने के सारे खेलों में
अब बहुत बडी पूँजी निवेश है।"[1]

देश की अर्थ व्यवस्था देश का आईना होती है। लेकिन हमारे नेताओं ने इसका नज़र अंदाज किया है। अर्थ प्राप्ति से मनुष्य स्वार्थ बनता है। स्वार्थता मनुष्य को अंधा बना देती है। इसका खुलासा 'राज्यसत्ता' नामक कविता में है-

"राज्य सत्ता
तिहाड की दीवाल है
भागलपुर की तेजाब है
अन्तुले की नैतिकता और
जगन भाई का लोक तंत्र है।"[2]

आर्थिक विषमता की गोद में वर्ग भेद को तोडना उदय जी चाहते हैं। इसका प्रतिरोध 'अनुकपूर जंक्शन' नामक कविता में है-

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - पृ. 32
2. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - राज्य सत्ता - पृ. 64

"....पास ही तो है अनुकपूर
जहाँ पोटर - खालासी बीडी फूँकने
खैनी मलते
हक्क-हक्क हँसते
पटरियों के किनारे
चलते चले जाते है दूर-दूर तक
उनकी कन्दीले सरकती रहती है
अंधेरे में हिलती हुई।"[1]

इस प्रकार उदय प्रकाश की रचनाओं में मनुष्य की चिंता और संघर्ष के व्यापक फलक हम देख सकते हैं। श्रमशील लोगों की दयनीय स्थिति पर वे चिंतित हैं। देश की पूरी संपत्ति समर्थ लोगों के अधीन में है। यह तो श्रमशील लोगों का पसीना है। इस कारीगर और निर्माता के विविध चित्र उदय प्रकाश की कविताओं में मिलेंगे। 'पिता' नामक कविता के द्वारा उन्होंने इस तथ्य को उद्‌घाटित किया-

"नाके के पार
शहर तक में
पिता का रौब था।
एक-एक इमारत पर
उनकी कन्नियाँ सरकी थी।
एक-एक दीवार पर
उनकी उँगलियों के निशान थे

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - अनुकपूर जंक्शन - पृ. 22

हर दरवाज़ें के काठ पर
उनका रन्दा चला था।
जहाँ से गाँव की वीरानगी शुरू होती है
हर खेत की कठोर छाती पर
पिता अपनी कुदाल
धँसा गये थे।
हल की हर मूठ पर
उनकी घट्ठेदार हथेलियों की छाप थी।
हर गरियार बैल के पुट्ठों पर
उनके डण्डे के दाग थे....
x x x
बाद में पिता
गायब हो गये
कहते हैं खेत, कुदाल
बैल, इमारतें, ईंट, दरवाजे, बाज़ार
उन्हें पचा गये।"[1]

श्रमिकों को अपनी जीने की लड़ाई में अधिकांशतः पराजय मिलती है। उपर्युक्त कविता में सत्ता के लिए एवं सत्ता की ओर से दिए मोहक नारों को अपने पिता को समझानेवाला एक बच्चा हमारे सामने आता है।

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - पिता - पृ. 16

सब के सब बिगड जाने पर श्रमिक वर्ग के लिए पूँजीपति लोग (इंजनीयर) संदेश भेजते हैं। यह संदेश वास्तव में उदय प्रकाश के सामाजिक सरोकार को स्पष्ट करता है-

"कहाँ है कहाँ है?
कारीगर
कारीगर को बुलाओ
इमारत हिल रही है
जोर जोर से
इंजीनीयर कहता है
नही जानता इंजीनियर
या जानता है
कि इमारत हिल रही है
ज़ोर-ज़ोर से
क्योंकि तीन सौ मील दूर
गाँव में अपनी झिंलगी खटिया पर
पडा हुआ कारीगर
खॉस रहा है ज़ोर-ज़ोर से।"[1]

आर्थिक विषमता के कारण श्रमिक लोग अनेक प्रकार की बीमारियों को झेल रहे हैं। अन्य लोगों की तरह वे भी अपने बच्चों को सुख-सुविधाएँ देना चाहते हैं। लेकिन दे नहीं पाते। इसका ज़िक्र 'सामान्यतया ऐसा होता है' कविता में है-

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - इमारत - पृ. 19

"मैं तुम्हें एक हल्की सी थपकी के सिवा
एक चालू सी पढाई
सादे-से खाने के सिवा
और कुछ नहीं दे सकता।
ओ, तीन साल की नन्ही इच्छाओं,
तुम्हारी उठान के लिए
तुम्हें पंख तक नहीं।
एक बिलकुल खाली
और शांत
आकाश भी
नहीं।"[1]

सर्वहारा की नियतियाँ हैं कि वे निरंतर काम करते रहते हैं और रोगग्रस्त होकर होकर मरते हैं। उनके बच्चों को भी शांत वातावरण का सपना देखने की सुविधाएँ नहीं हैं। वे बच्चे दरिद्रता में जन्म लेकर, वहाँ पले होकर उसी दरिद्रता में मर जाते हैं। 'मैंगोसिल' कहानी इस संदर्भ में विचारणीय है।

4.3.1 संबन्धों का अर्थीकरण

अर्थ प्राप्ति से रिश्तों में बदलाव आ जाता है। पैसा आज सबका मापदंड बन गया है। उदय जी मुताबिक - "दुनिया में आदमी की इज्ज़त ओहदे और पैसे से होती है।"[2] इस तथ्य का खुलासा है 'मोहनदास' कहानी। कहानी में गाँववाले

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - सामान्यतया ऐसा होता है - पृ. 21
2. उदय प्रकाश - दरियाई घोडा - तद्दुतिवारी गणनाधिकारी - पृ. 85

मोहनदास को नौकरी मिलने की खबर सुनकर उनसे प्यार करते हैं। सब लोग उनको शुभ कामनाएँ देते हैं। नौकरी प्राप्त करने के पहले एवं बाद में लोगों की प्रतिक्रिया देखिए-

-"गाँव के जो लोग उससे पूरी तरह मुँह फेर चुके थे, उन्होंने भी इससे मेलजोल बढाना शुरू कर दिया। जो लोग उसकी मेहनत और पढाई का मज़ाक बनाने लगे थे, उन्होंने बदले हुए स्वर में कहना शुरू किया - "यह तो होना ही था। ऐसी डिग्री और पढाई के बाद मोहनदास कब तक खाली बैढता।"[1] आज नौकरी के अनुरूप हमारी चिंता, वेशभूषा और आचार-विचार बदल जाते हैं। 'दद्‌दु तिवारी गणनाधिकारी' कहानी इस तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। दद्‌दु तिवारी गणनाधिकारी बनने के बाद उनमें परिवर्तन आ गया। इस परिवर्तन का ज़िक्र उदय जी ने यों दिखाया - "पंडित जी उसे 'चुंगीनाका' कहते थे जब कि दद्‌दु चाहते कि उसे 'आफिसर' कहा जाय। दद्‌दु हमेशा धुले और प्रेस किये हुए कपडे पहनते। टेरिकाट की पैंट और टेरिकार की शर्ट। काली बूट।"[2] बचपन में जब वे गडना नाला लाँघकर गाँव की टाट पट्‌टी वाले प्रायमरी स्कूल में पढने जाते थे तो अक्सर स्कूल से गोल मारकर सनाई के खेतों में छिपकर खीरा या भुट्‌टा खाते, या कभी कभी बीडी के सुट्‌टे मारते हैं। उन दिनों उनका सबसे पक्का दोस्त रमेशा था। लेकिन उनसे बात करना आज वह पसंद नहीं करता। इसका कारण यह है - "रमेश उन्हें हमेशा 'दद्‌दु साले' कहकर बात करता था। गाँव के सृजनशील

---

1. उदय प्रकाश - मोहनदास - पृ. 19
2. उदय प्रकाश - तिरिछ - दद्दु तिवारी : गणनाधिकारी - पृ. 117

लोक कलाकारों द्वारा निर्मित एक से एक उर्वरक और संभावनापूर्ण गालियाँ उनके मुँह से अनायास झरती रहती 'दद्दु साले' का इस्तेमाल करना उन्हें 'कार्यालय' की मर्यादा का गंभीर उल्लंघन लग रहा था।"[1] इस घटना से उनको ऐसा लगा कि उनका सम्मान और उनके पद की गरिमा खतरे में थी। इसी चिंता से वे कहने लगे "रमेश जी, यह आपका मकान नहीं, आफिस है, आफिस एंड-ड्यूटी इज ड्यूटी। रमेश जी, यू गेट आउट।"[2] यह सुनकर रमेश सपक गया। चुपचाप उठकर चला गया। पहले दद्दु तिवारी को ऐसा लगा कि गाँव दरअसल एक परिवार ही है। लेकिन आज गाँववालों से वह घृणा करता है। उसके पिता के अनुसार अपनी इज्ज़त अपने हाथ होती है। गाँव के लोग उनकी बढती इज्ज़त देखकर जल रहे थे। आज इसी सोच के फलस्वरूप रिश्तों में बदलाव आ गया।

आत्मीय संबन्धों में अर्थ की महत्ता आ जाये तो आत्मीय संबन्ध ढोह रही है। इस अवसर पर पुष्पपाल सिंह का विचार विचारणीय है - "आत्मीय रिश्ते की पहचान और परख तथा उन संबन्धों के निर्वाह में अर्थ प्रधान दृष्टि प्रमुख हो जाने से आज संबन्ध निभाए हीं ढाह जाते हैं। भाई-बहन, माँ-बाप, भाई-भाई आदि के संबन्ध में अर्थ की प्रमुखता को रोकना चाहिए।"[2] उदय जी की खास चर्चित कहानी 'छप्पन तोले का करधन', 'दिल्ली की दीवार' एवं 'भाई का सत्याग्रह' आदि इस तथ्य से जूझनेवाली है। 'दिल्ली की दीवार' कहानी में भाई-भाभी के बीच के रिश्तों में पैसे की लालसा से भाई को किस प्रकार भागना पडा। माँ-बाप मर गए तो भाई

1. उदय प्रकाश - तिरिछ - दद्दुतिवारी गणनाधिकारी - पृ. 117
2. वही - पृ. 117

और भाभी ने सारी ज़मीन जायदाद पर कब्जा कर लिया। भाई के सोल ने ही साजिश के तहत उसे स्मैक की लत लगा दी। फिर उसकी ऐसी हालत हो गई कि उसे अपने घर से भागना पड़ा। इस अवसर पर मुक्तिबोध का विचार सराहनीय है कि मानव जीवन में आई यांत्रिकता का कारण मशीनीकरण को वे नहीं मानते अपितु पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था को मानते हैं। 'भाई का सत्याग्रह' कहानी इस तथ्य को और भी मज़बूत करती है। भाई सात साल पहले अपने गाँव विष्णुपुर गया। लेकिन वहाँ आने पर उन्होंने समझ लिया है - "...ग्राम पंचायत के वार्ड नंबर 17 से, जहाँ उसका घर था, अब उसका नाम कट गया है। उसकी जगह पर भाई के साले का नाम है, जो गोरखपुर में किसी की हत्या करके फरारी में वहाँ रह रहा है रात में उसने देखा कि हाँल में रखे जिस पलंग पर पिता जी सोते थे, उसमें भाई का साला सो रहा है। वही उसे पंडित मनोहर लाल ने, जो पिता के हम उम्र थे, बताया था कि यह मकान भी उसके नाम नहीं रह गया हैं।"[1] यह आज की सच्चाई है। लेकिन इसको रोकना चाहिए। क्योंकि रिश्ते टूट जाते हैं। उदय जी हम से बताते हैं-

"जैसे भी हो
दो हाथियों को
लड़ने से रोकना चाहिए।"[2]

4.4 भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था

समाज को उन्नति के मार्ग पर ले जानेवाली राजनीति आज सबसे अधिक भ्रष्ट हो गयी है। क्योंकि आज राजनीति का एकांगी विकास हो रहा है। फलस्वरूप

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - भाई का सत्याग्रह - पृ. 83
2. उदय प्रकाश - अबूतर कबूतर - दो हाथियों की लडाई - पृ. 68

राजनीति का चेहरा बदल गया। डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त का विचार यहाँ समीचीन होगा - "....भारतीय राजनीति में जिस प्रकार सत्ता प्राप्ति को लेकर अनैतिकता और भ्रष्टाचार को बढावा मिला उससे न तो पंचवर्षीय योजनाओं का ही सम्यक रूप क्रियान्वित हो सका न ही समाजवाद की स्थापना का लक्ष्य पूरा हो सका।"[1] इसी से हमें पता चलता है कि हमारे ऊपर या हमारे साथ भ्रष्ट व्यवस्था मदारी के खेल करती है। वह सत्ता लोलुपता, स्वार्थपरता, व्यक्तिवाद, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिक संघर्ष आदि भयानक रूप में हमारे सामने ले आ रही है। इसी बीच में आम आदमी की पुकार कोई नहीं सुनता। इसलिए हम निसंदेह कह सकते हैं कि भारत में गाँधीजी के स्वप्नों के अनुरूप आम आदमी का स्वराज्य नहीं हुआ, बदले में नेताओं एवं पूँजिपतियों और ठाकुरों का स्वराज्य है। इन्हीं पूँजीपतियों एवं ठाकूरों के हाथ में है शासन चक्र। इस चक्र की गति राजनीतिज्ञों की गति के अनुरूप है। वास्तव में यहाँ से व्यक्ति एवं व्यवस्था के बीच का द्वन्द्व शुरू होता है।

उदय जी राजनीतिक व्यवस्था से डरते हैं। लेकिन वे साहसी होकर व्यवस्था से पूछते हैं - "....1970-72 के दिनों में विनायक करोडे नाम के एक युवा कवि की कविताएँ बहुत तेजी से लोगों का ध्यान आकर्षित कर रही थीं। बताइए विनायक करोड आज कहाँ है? मैंने अभी नागपूर में पूछा तो पता चला कि उसका कई वर्षों से कोई अता-पता नहीं है। ....वे भी भुवनेश्वर की तरह कहीं किसी सडक की पटरी पर किसी अनजान शहर में किसी रोज़ अपनी साँसे छोड

---

1. गणपती चन्द्रगुप्त - हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - पृ.

बैठे हो। लेकिन यह सच है कि पिछले तीस सालों से विनायक करोडे का कोई पता नहीं हैं। ...ऐसी घटनाएँ मुझे डराती है।"[1] वास्तव में रचनाकार होने के कारण उदय जी राजनीतिक व्यवस्था से डरते हैं। डरते हुए शांति मिलने के लिए ईश्वर के पास जाना वे चाहते हैं। उनके मुताबिक - "मैं ईश्वर के और भी करीब हो जाना चाहता हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि राजनीति और उसे चलानेवाली विचारधाराएँ उन लोगों के हाथ के औजार हैं, जो हमारे जैसे नहीं हैं.....।"[2] अर्थात सत्ता ठोस चीज़ है, उसके पाँव-दाँत सब है। इससे लडना खतरनाक है। पद, प्रतिष्ठा एवं अन्य अमानवीय प्रवृत्ति करनेवाले इनसे लडना खतरनाक ही है।

उदय जी ईश्वर के पास जाना चाहते हैं, लेकिन ईश्वर भी हमारी व्यवस्था देखकर भयभीत सा दिखाई पडता है। पहले में विरोध का आधार जरूर राजनीति ही है। ईश्वर की दयनीय स्थिति का खुलासा यों वे देते हैं-

"ईश्वर कहता है सिरदर्द की गोली ले आना
आधा गिलास पानी के साथ
x x x
चलिये मैं भी पूछता हूँ
क्या मांगूँ इस जमाने से मीर
जो देता है भरे पेट को खाना
दौलतमंद को सोना, हत्यारे को हथियार

---

1. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बातें - पृ. 132
2. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बातें - पृ. 132

बीमारी को बीमारी, कमजोर को निर्वलता
अन्यायी को सत्ता और व्यभिचारी को बिस्तार।"[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक जैसे अनेक आयामों को खोलकर रख देने का प्रयास है। राजेन्द्र यादव के मुताबिक - "व्यस्था अमूर्त है,.... हम इस व्यवस्था को चकनाचुर कर डालेंगे। इसे जड मूल से बदल डालेंगे। जब तक व्यवस्था नहीं बदलेगी, कुछ भी नहीं होगा।"[2] इसलिए उदय जी व्यवस्था की विद्रूपता को नंगा करने की लगातार कोशिश कर रहे हैं। व्यवस्था की विद्रूपताओं में व्यक्ति हताश एवं आश्रयहीन है। इस दुःखद स्थिति का ज़िक्र 'सुनो कारीगर' कविता में हुआ है। साथ ही साथ अन्याय के विरुद्ध लडने का आह्वान भी दिया जा रहा है।

"यह कच्ची
कमजोर सूत सी नींद नहीं
जो अपने आप टूटती है
रोज-रोज की दारुण विपत्तियाँ है
जो आँखें खोल देती है अचानक
सुनो, बहुत चुपचाप पाँवों से
चला आता है कोई दुःख
पलकें छूने के लिए
सीने के भीतर आनेवाले

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - सहानुभूति की माँग - पृ. 41
2. राजेन्द्र यादव - समायोजन (विद्यानिधि) - न लिखने का कारण - काँटे की बात-1 - पृ. 43

कुछ अकेले दिनों तक पैठ जाने के लिए
x x x
चलने के पहले
एक बार और पुकारो मुझे
मैं तुम्हारे साथ हूँ।"[1]

जनवादी कवि अपने समाज के लिए कार्यरत है। इसलिए उदय जी बताते हैं कि वे जनता के साथ हैं। सरकार बनाये रखने के लिए जनता की ज़रूरत होती है। मतदान देकर सरकार को जनता अधिकारी बनाती है। चुनाव जीत ने के बाद जनता से विजयी लोग विदा लेते हैं। इस बात का ज़िक्र 'तितली' नामक कविता में उदय जी ने खुलकर प्रस्तुत किया है-

"सरकार को एक आदमी चाहिए
सिर्फ एक अदद आदमी
वह उसके साथ सहयोगी सारी रात,
सपनों की दुनिया में टहलायेगी
सीने में टिकायेगी अपना माधा
चूमेगी उसे ओर-पोर।
सरकार कसम खाकर कहती है
कि सुबह होने पर
जब वह कहेंगी - 'विदा बधु विदा'।
तो आदमी लौटेगा

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - पृ. 9

साबुत-का-साबुत
एक लौटते हुए आदमी की तरह।"[1]

उदय जी खून से रहित सुखद दिनों की याचना करते हैं इस व्यवस्था से। यह याचना अपने परिवार के लिए मात्र नहीं संपूर्ण मानव के लिए है। कविता में उदय जी का मानवतावादी दृष्टिकोण प्रकट है-

"सत्ताइस अप्रैल एक प्रार्थना है
अट्टाइय अप्रैल कपास का फूल है
सत्ताइस के खून से लिथडकर
बाहर निकलता हुआ
आज बारुद बचा हुआ है
हत्याएँ बची हुई है
मुझे अपनी आँख-दिमाग
और परिवार के लिए
कल की नींद चाहिए
थोडी सी
मेरा बच्चा आखिरकार
कपास के फूल से बंद-गद्दे में
सोना चाहता है-
अप्रैल उन्नीस सै अठहत्तर की
सत्ताइसवीं तारीख को।"[2]

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर कबूतर - तितली - पृ. 76
2. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर, बैलाडीला - पृ. 32

व्यवस्था में कहाँ आदमी घुट या टूट रहा है, इसको सबसे पहले संवेदनात्मक वाणी लेखक ही देते हैं। हमारी व्यवस्थाएँ परंपरा, संस्कार एवं आस्था का रूप लेती हैं। इसलिए आदमी आसानी से बाहर नहीं आता। उदय जी 'सरकारी कोयल' नामक कविता में इसका खुलासा यों दिया-

"हम कोयल है
सरकार के
हम साज़िदे
दरबार के
बत्तख के पैर जैसे ठंडे है
हमारे विचार
निश्चित रहें आप
x x x
जहाँ भी जायेंगे
आपकी दुंदुभी बजायेंगे।"[1]

सत्ता के लिए दुंदुभी बजानेवाले लोगों से उदय जी घृणा करते हैं। क्योंकि उन्होंने हमारे सामने अनेक कूटनीतियों एवं योजनाओं को पेश किया है। फलस्वरूप देश अवनति की ओर जा रहा है। चारों ओर सुविधा एवं असुरक्षा का कवचकुंडल फैलाया गया।

"एक दिन सुअर ने कहा
हम खुरा रहेंगे

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - सरकारी कोयल - पृ. 89

वह सारे दिन हँसता रहा
एक दिन सुअर ने कहा-
हम उत्पादन बढ़ायेंगे
वह मोटे होता चला गया
एक दिन सुअर बोला
बाकी तो ठीक है
बस हमें मेहनत करनी चाहिए
उस दिन सुअर दिन भर सोता रहा
x x x
उसके मोहल्ले में
सफाई महकमे के कर्मचारियों ने
हड़ताल कर रखी थी।"[1]

हमारे बुर्जुआ लोकतंत्र में साधारण जनता के शोषण का अंत नहीं हो पाया। जनता में भय एवं आतंक फैलाकर उसे सोचने एवं विचार-विमर्श करने का हक नहीं है। उदय जी अपनी 'सुअर (एक)' नामक कविता में भ्रष्ट व्यवस्था को डरानेवाले शोषित आदमियों का चित्रण किया है-

"उन्हें पगार नहीं मिली थी
बाज़ार में राशन नहीं था
सब्जी गायब थी
फिर भी उन्होंने जाने क्यों

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - सुअर (ए) - पृ. 59-60

एक बडे से चूल्हें पर
एक बडी सी कहाडी चढा रखी थी।
सुअर कहाडी से
डर गया था।"[1]

वास्तव में हमारे देश में पगार, सब्जी एवं राशन नहीं है। ये सब सरकार साम्राज्यवादी शक्तियों को बेच रही है। आम जनता भूख से तडप रही है। ये शोषित-गरीबी लोग सरकार के विरुद्ध, अत्याचार को मिटाने के लिए एकत्रित हुए। एकत्रित जनता को देखकर उदय जी को कडाही जैसा प्रतीत होता है। कडाही चूल्हे पर खडी है। अर्थात वे प्रतिरोध के लिए तैयार हो रहे हैं। वास्तव में इसी कडाही से सरकार भयभीत है।

सच्चे लोकतंत्र में जनता अपने अधिकारों के प्रति सजग होती है। साथ-साथ वे बहत्तर स्थितियों की माँग भी करती हैं। सत्ता-सुख राजनीतिज्ञों को अंधा बना देता है। पार्टी चाहे कोई भी हो, सत्ता में नेता-नियम, व्यवहार और आचरण में बदलाव नहीं आया है। उदय जी ने संवेदनहीन राजनीतिज्ञों का खुलासा यों दिया-

"एक दिन सुआ को
खूब जोरों का जुकाम हुआ
नाक बहने लगी
गले में घरीहट

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - सुअर (एक) - पृ. 59-60

और खाँसी के झटके
जब नाक ज्यादा बेह
तो उसे पोछता तो जरूरी है
नाक जब ज़्यादा बहने लगी
तो सुअरन ममने को बुलाया
x x x
तो मेमना कुछ देर सोचने लगा
कुछ देर सोचने लगा
इसलिए कुछ देर चुप हो गया
तब तक सुअर की नाक
फिर बहने लगी
सुअर मेमने को मारा
उसकी रुमाल से नाक पोंछी
फिर एक टुकडा दर्जी को दिया
और अपने सिर के लिये नर्म-मर्म
साफ सफेद टोपी सिलाई।"[1]

'सुअर' प्रजा (जनों) पर संपूर्ण शोषण करनेवाले राजनीतिज्ञों का प्रतीक है। 'मेमना' हम जैसे मासूम आदमी का प्रतीक भी। अमानवीय एवं संवेदनहीन सत्ता प्राणांत तक शोषण करने में हिचकती नहीं। यह सत्ता आज के 'महापुरुष' है। उदय जी अपनी कविता 'महापुरुष' को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत कर देश की

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - सुअर (तीन) - पृ. 62-63

अवनति का ज़िक्र करते हैं। सत्ताधारी लोग चाहते हैं कि जनता को चुपचाप नीचे गर्दन झुकाकर, शंतिपूर्ण जीवन बिताना चाहिए। राजनीति आज कुछ व्यक्तियों के हाथ में सिमट गई है-

लोग कहते हैं
महापुरुष दशावतार है
विराट वामन है
सत्ता के असली पायें है
सभ्यता के गुम्बद है
महापुरुष की कीमती है
अपनी तरह के एक है
महापुरुष का दीन दुनिया से
लेना देना नहीं कोई
फिर भी जगत की विपत्तियों के
मूलभूत कारण है
महापुरुष
महापुरुष की धोती का एक छोर
नगर सेठ की तिजारी में
प्रजातंत्र एक मंत्र है
जिसे फूकते हैं महापुरुष
हारते हैं तो जीतते है
जीतते है तो जीतते है।"[1]

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - महापुरुष - पृ. 72-73

आज़ादी के बाद संविधान को रखकर हम ने प्रजातंत्र की शपथ ली। प्रजातंत्र की मूल अवधारणा सर्वसत्तावाद के खिलाफ है क्योंकि इस राज्य प्रणाली में शक्ति किसी एक व्यक्ति के हाथ में नहीं होती, बल्कि जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों को राज्य संचालन का प्राधिकार प्राप्त होता है। आज सत्ता के लोग प्रजातंत्र को अपने अनुकूल बदलते हैं। आज संविधान की व्याख्याएँ बदल गयी हैं-

"पुलिस और फौज
सचिवालय और न्यायालय
कर्फ्यू और गोली
प्रजा और तंत्र के संबन्धों की
संवैधानिक व्याख्याएँ हैं।"[1]

इस प्रकार व्यवस्था के प्रति व्यक्ति का विद्रोह समकालीन रचना की मुख्य प्रवृत्ति है। राजेन्द्र यादव के मुताबिक - "...सब मिलाकर ऐस्टैब्लिशमेण्ट के लिए उपेक्षा और क्रोध की ध्वनि प्रकट होने लगी।"[2] वास्तव में यही आक्रोश कुदरत की देन ही है। उदय जी की चर्चित कहानी 'और अंत में प्रार्थना' यही आक्रोश की है। वास्तव में उदय प्रकाश किसी राजनीति के पक्षधर नहीं हैं। जनता की भलाई के लिए वे लिखते हैं। उनके मुताबिक - "मैं अब किसी राजनीति में नहीं हूँ, मेरी कोई विचारधारा भी नहीं है। लेकिन मानव-जीवन के प्रति प्रेम मेरे पास है। मैं जनता के सुखों में दुःखों में शरीरक होता हूँ और उन्हीं के बारे में लिखता हूँ।"[3] व्यवस्था से

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर कबूतर - राज्य सत्ता - पृ. 64
2. राजेन्द्र यादव - कहानी स्वरूप और संवेदना - पृ. 57
3. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बातें - पृ. 145

पीडित डॉ. वाकणकर एक आदर्श चिकित्सक था। वह आर.एस.एस. का कार्यकरता था। लेकिन शासक का आज्ञानुवर्ती नहीं था। कहानी लिखते समय हिन्दुत्व पार्टी का शासन हो रहा था। मुझे ऐसा लगा कि कहानी आर.एस.एस. के द्वारा सत्ता एवं विचारधारा का पुनः परीक्षण है। डॉ. वाकणकर बार-बार व्यवस्था से प्रश्न करता है - "कहीं हमारे देश में लोकतंत्र का असली अर्थ जनता द्वारा अपनी शत्रु व्यवस्था का चुनाव तो नहीं है?"[1] उदय जी का यह सवाल आज भी प्रासंगिक है। बाबरी मस्जिद विध्वंस के उपरान्त आर.एस.एस की बात करने का साहस उठाकर बार-बार सोचता है - "...हमारा देश भी यदि कभी हिन्दु राष्ट्र बना तो वह किसका होगा? व्यापारी ठेकेदार या सवर्ण जातियों का या फिर उसमें पिछडे समाजों की कोई जगह होगी?"[2] कहानी अनेक सवालों का जवाब ढूँढने का आदेश देती है।

पुलीसों ने मुसलमान लडकों की गोली मारकर हत्या की। इस घटना सरकार की इमेज या प्रतिछाया, कलंकित करनेवाली थी। डॉ. वाकणकर ने तौफीक अहमद की मृत्यु के विरुद्ध सवाल किया। यह घटना डॉ. वाकणकर के लिए खतरनाक हुई। फिर भी वह हारता नहीं, वह सोचता है कि यह भूमि ताकतवार लोगों के लिए मात्र नहीं। अल्प विकसितों एवं कोमल जीवों के लिए है। इस प्रकार सोचनेवाले डॉ. वाकणकर को तौफीक अहमद का पोस्टमार्टम का दायित्व सौप गया। 'पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट' किस प्रकार तैयार करना है इसका आदेश भी सरकार से मिला है। व्यवस्था ने उनसे बताया कि उनकी मृत्यु स्टोन इंज्युरी से

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - और अंत में प्रार्थना - पृ. 224
2. वही - पृ. 109

है, पुलीस की गोली से नहीं। झूठा रिपोर्ट तैयार करने के लिए वह तैयार नहीं था। इसलिए उनके घर में सत्ता का गुंडा घुस गया, पत्नी भाग रही, बेटी रो रही है। अर्थात उनकी संपत्ति को कलंकित किया इस व्यवस्था ने। हमें पता है कि सभी अत्याचारों की शिकार बनती है बेचारी स्त्रियाँ। वाकणकर अकेला महसूस करता है और कहता है - "मैं बहुत अकेला महसूस करता हूँ। साथी कहते हैं मैं व्यावहारिक नहीं हूँ। मैं यह समझना चाहता हूँ कि क्या जो बेईमान नहीं है वह व्यावहारिक नहीं हो सकता।"[1] भूमंडलीय समाज में हम भी वाकणकर के समान अकेले हैं। वाकणकर अकेले होने पर भी सच्चे रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करता है। व्यवस्था से संघर्ष कर वाकणकर वहीं गिर पडा उसे 'ब्रेन हेमरेज' हो गया था। वह कॉमा (coma) में पड गया। उदय जी यह बताना चाहते हैं कि 'इनसाफ का कॉमा' में पड गया। याने कि 'values in coma' है। कहानी के द्वारा मानवाधिकारों को हडपनेवाली व्यवस्था के अन्तर्रहस्यों का पर्दाफाश करना वे चाहते हैं।

उदय प्रकाश सोच समझकर ही कहानी का गठन करते हैं। समाज एवं समय को अच्छी तरह विश्लेषण करके रचना करते हैं। उनके मुताबिक - "मैं अपने समय की बात लिख रहा हूँ।"[2] इसलिए 'हीरालाल का भूत' में पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए हीरालाल मरकर भूत-प्रेत बनकर हवेली में आते हैं। कहानी में कई प्रतीकों के द्वारा भ्रष्ट व्यवस्था से वह प्रतिरोध करता है। गाँव का ठाकूर एवं पटवारी दोनों मिलकर हीरालाल का सबकुछ छीन लेते हैं। याने

1. उदय प्रकाश - और अंत में प्रार्थना - पृ. 99-100
2. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बातें - पृ. 60

कि व्यवस्था द्वारा अर्जित वैयक्तिक विकास मनुष्य को स्वार्थी बनाता है। स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह निम्नस्तर तक जाने में हिचकता नहीं। इसका खुलासा देखिए - "गाँव का हर आदमी इस बात को जानता था कि हीरालाल का सबकुछ लूट लिया है। ज़मीन, जायदाद, ज़िंदगी पसीने से लेकर औरत की इज्जत तक।"[1] हीरालाल एवं उनकी पत्नी की मृत्यू हुई। लेकिन हीरालाल का भूत हवेली और लोगों पर हावी हो गया। हवेली खंडहर हो गयी। एक दिन हीरालाल का भूत हरपालसिंह के पास आया। उन्हें देखकर उन्होंने पूछा - कौन है रे? मैं हीरालाल उसने कहा और खडा हो गया। वह सफेद खंभे की तरह हो गया था और आसमान तक ऊँचा होता जा रहा था। पटवारी काँपने लगा। वह चीखना चाहता था, लेकिन गले से पतली सीटी की आवाज़ निकल रही थी। उसकी सारी पेशाब पैजामे में ही हो गयी और वह बेहोश होकर गिर पडी। एक प्रकार से यही बेहोश होना भ्रष्टाचार के प्रति जनता की जीत ही है। प्रतिरोधी चेतना व्यक्त करने के लिए उदय जी भूत-प्रेत जैसे प्रतीकों का इस्तेमाल करते हैं। क्योंकि मनुष्य है तो वह व्यवस्था से डरता है, व्यवस्था उसकी हत्या करती है। भूत को किसी व्यवस्था या व्यक्ति से भयभीत होने की जरूरत नहीं। इसी से पता चलता है कि व्यवस्था की अमानवीय प्रवृत्तियों के विरुद्ध भूत की तरह लडना है। भूत केवल हीरालाल का मात्र नहीं। हरिजनों, मोचियों एवं भूमिहीन लडकों के हैं।

---

1. उदय प्रकाश - हीरालाल का भूत - पृ. 129

राजनीतिज्ञ लोगों का षड्यंत्र पहचानना मुश्किल की बात है। क्योंकि वे सफ़ेद कपडे पहनकर हमारे बीच विकास रूपी कूटनीति लेकर हँसकर आते हैं। उदय जी का नज़रीया देखिए-

"वह भाषणओं करता हो चिडियों
और बच्चों से बेतहाशा प्यार
कही उसने बनवा दिया हो आस्पताल
धर्मशाला
कोई नृत्य केन्द्र
कोई पुस्तकालय
संभव है
हमारे बीच के लोग हमसे बहस करें
और कहें
कि यह है प्रमाण उसकी संवेदनशीलता का।"[1]

हमारे राजनीतिज्ञों की उपदेश प्रियता व्यावहारिक अकर्मण्यता का प्रतीक है। वे जनता को भाषण में उपदेश देते हैं और खोखले आदर्शों को हमारे ऊपर थोप लेते हैं। यह सच्ची राजनीति नहीं। समाज संबन्धी जागरूकता बरखनेवाली राजनीति ही श्रेष्ठ है।

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - तानाशाही का खोज - पृ. 56

4.4.1 राजनीतिज्ञों की गुंडागर्दी

राजनीति हमारे जीवन को अत्यधिक प्रभावित करनेवाली सोच है। इस सोच को आधार बनाकर राजनीतिज्ञों ने प्रजातांत्रिक मूल्यों को छोड दिया। भारत का नक्सा उन्होंने अपने अनुरूप बदल दिया। गाँधी जी का सपना एवं नेहरु का सपना आज भी अपूर्ण हैं। आज राजनीति का चेहरा बदल गया। राजनीतिज्ञ कुछ भी करने के लिए तैयार होकर खडे हैं। हमें पता है कि समस्त जनता की उम्मीदें उन पर ही टिकी रहती हैं, जो मूलतः जनता के सेवक होते हैं। लेकिन वास्तविकता क्या है? इस पर डॉ. माधव सोनटक्के का विचार यह है कि समकालीन राजनीति राजनायकों की अनीति का दूसरा नाम है। सत्ता और ऐश्वर्य प्राप्ति आज की राजनीति का मूल उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए राजनायक कुछ भी करने के लिए अचकचाते नहीं हैं। अतः राजनीति का परिदृश्य गंदगी से भरपूर है।

राजनीति की आपत्तियों से टकराते हुए आम-आदमी हताश है। हताश में पडी जनता को राजनीति देखकर ऐसा लगा कि राजनीति विवेक शून्य है, भ्रष्टाचार की पोषक है साथ ही साथ आत्मशून्यता की प्रसारक है। जनता को मरे जाने का भय भी होता है। उदय प्रकाश अपनी रचनाओं के ज़रिए उस राजनीतिक व्यवस्था के विरुद्ध रोष व्यक्त करते हैं। जो व्यवस्था आदमी को आदमी बनकर जीने से रोकती है। वे 'राज्य सत्ता' नामक कविता में नेताओं की फाँसीवादी मानसिकता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं-

“राज्य सत्ता
प्रजातंत्र का प्रजापति है
और ‘प्रजा’ अगर तंत्र से
टकराती है कभी
तो तंत्र की हिफाजत में तैनात
बंदूक की नाल से
बोलती है राज्य सत्ता-
कि सुनो मेरी प्यारी प्रजा
तुम्हें तंत्र के भीतर ही
प्रजा होने का हक है
पुलीस और फौज
सचिवालय और न्यायालय
कर्फ्यू और गोली
प्रजा और तंत्र के संबन्धों की
संवैधानिक व्याख्याएँ है
राज्य सत्ता कहती है-
कविता को नहीं होना चाहिए
राज्य सत्ता के बारे में।”[1]

यहाँ राजनीतिज्ञों के तांडव नृत्य की शुरुआत का ज़िक्र है। इस शुरुआत को हमें परिचित कराना ही उदय जी का उद्देश्य नहीं है। भ्रष्ट सत्ता के प्रति संघर्ष करके जीवन को सुंदर बनाना वे चाहते हैं। सत्ता के लोग आज के ज़माने में

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर कबूतर - पृ. 64-65

रचनाकारों से डरते हैं। क्योंकि वे मूल्यहीन राजनीति को अपनी रचनाओं का विषय बनाकर अपने साहस और दायित्त बोध को परिचय सत्ता पर फेंक देते हैं।

उदय जी अपनी चर्चित कहानियाँ जैसे दद्दुतिवारी गणनाधिकारी भाई का सत्याग्रह, मोहनदास, पॉल गोमरा का स्कूटर और पीली छतरीवाली लड़की में 'अमानवीय प्रवृत्तियों की तलाश करते हैं। दद्दुतिवारी केन पुल के चुंगीनाका में गणनाधिकारी के पद पर नियुक्त हुआ। दद्दुतिवारी एक होशियार आफीसर है। वह ड्युटी को सब कुछ माननेवाला था। एक बार अपने मित्र से वह कहता है - "रमेश जी, यह आपका मकान नहीं, आफिस है, आफिस। एंड-ड्यूटी इज़ ड्यूटी। रमेश जी, यू गेट आउट।"[1] फिर भी सत्ता ने इन पर क्या-क्या किया? इसका चित्रण कहानी में आत्मीयता के साथ उदय जी ने किया। उदय जी का सारा आक्रोश मुखौटा पहनेवाले कर्मचारियों एवं अफसरों से है। ये लोग वास्तव में राजनीतिज्ञों का एजेंड हैं। एक दिन पुल पार करने के लिए एक प्राइवट जीप आकर रुकी। यह जैसिंह नगर के दारु भट्टि के ठेकेदार की थी। जिसमें विशुद्ध महुए के ठर्रे के नशों ने छुत कानूनगे, नायब तहसीलदार, एक्साइज इंस्पेक्टर एवं पटवारी रामनाथ महतो बैठे थे। रोड टैक्स देने के लिए वे तैयार नहीं थे। लेकिन दद्दुतिवारी ने निर्देश दिया - "जब तक रोड टैक्स की रसीद न कट जाय, नाके का बैरियर न खोल जाय।"[2] बैरियर को न खुलते देखकर जीप में बैठने वाले बडे अफसर लोगों ने वही से आवाज दी - "अरे टपरे में कौन बहरा बैठा है साला, जीप का गला बैठा जा रहा

1. उदय प्रकाश - तिरछ - दद्दुतिवारी गणनाधिकारी - पृ. 117
2. वही - पृ. 119

है और हरामजादा बैरियर नहीं खोल रहा है।"[1] यह सुनकर नायब तहसीलदार की आवाज़ आई - "देखना पटवारी, टपरे से खींचकर बाहर ले आओ साले को, घंट भर हो गया।"[2] इसी घटना से पता चलता है कि सरकार द्वारा लागू करनेवाला नियम साधारण जनता के लिए है। अगर एक साधारण व्यक्ति ने टैक्स न दिया तो उन्हें सजा मिलती है। दद्दुतिवारी मेहता से कहता है - "हाँ तो आपकी जीप का नंबर क्या है? इसमें कोई इल्लीगल सामान तो नहीं है? दो रुपया रोड टैक्स आप जमा करे तभी बैरियर खुलेगा।"[3] सरकार के अनुयायी पटवारी ने कहा - "सुनो हो दद्द, हम एक पइसा टैक्स-फैक्स नहीं देंगे। सबके सब सरकारी ड्यूटी में है। जीप भी सरकारी ड्यूटी में है।"[4] केन नदी के पुल के उद्घाटन सत्र में अरोडा ने घोषणा की है कि केन नदी का पुल राजनीति से ऊपर है। अर्थात राजनीति के दल को इसी रोड टैक्स में प्राप्त पैसा में हक नहीं, वह सीधे सरकार खजाने में जाता है। 'थेर्ड डिग्री' व्यक्ति के पराजय बोध एवं व्यवस्था की जीती-जागती तस्वीर है। कहानी के नायक राहुल के घर में चोरी हो जाती है। सुरेश को पता है कि फकीरा ने चोरी की। लाखों रुपये के आभूषण की। फकीरा पकडा गया और मारा गया। फिर भी उसने गलती कबूल नहीं की। वास्तव में पुलीस वाले जानते हैं कि उन्होंने ही चोरी की। फकीरा ने सारा माल चीफ म्युनिसपल आफिसर की पत्नी जो विधि एवं राजस्व मंत्री की बहन है उसे बेचा है। सुरेश की पत्नी का मंगल सूत्र अभी एम.ओ

---

1. उदय प्रकाश - तिरछि - दद्दुतिवारी गणनाधिकारी - पृ. 119
2. वही - पृ. 119
3. वही - पृ. 119
4. वही - पृ. 120

गुप्ता की पत्नी के गले में पडा है। लेकिन सुरेश वहाँ पहुँच न सकता। हरप्रीत सुरेश से पूछती है - "हाँ, तुम्हारी बीवी का सोने का मंगल-सूत्र जिसे वह उतारकर घर में रख गई थी और नकली पहनकर रहती थी, वह जरूर-सही-सलाम है। वह मंगल सूत्र सी.एम.ओ गुप्ता की वाइफ लॉ मिनिस्टर की बहन के गले में पडा है। क्या तुम वहाँ तक जा सकते हो?"[1] सुरेश की रिपोर्ट पर कोई कार्यवाही नहीं की जाती। फिर भी सुरेश लडता है। लेकिन वह हार गया। उदय जी के मुताबिक - "सुरेश हार गया था। पूरी तरह पराजित और अशक्त।"[2] उदय जी कहानी के अंत में पाठकों से सवाल करते हैं - "....इस व्यवस्था में, जहाँ एक रिक्शेवाला चोरी करता है और कानून मंत्री के घर में गलता है, वह व्यवस्था अपने ढाँचे में कैसी है? और क्या यह हमारी सबकी पराजय नहीं है कि हम न तो कहानी का ही ढाँचा बदल पा रहे हैं और न ही इस व्यवस्था को। क्या यही सच है कि दोनों ही अपरिवर्तनीय हैं?"[3] उदय जी व्यवस्थाओं की अपरिवर्तनीयता के कारण 'व्यवस्था' नामक कविता में बताते हैं-

"दोस्त चिट्ठी में
लिखता है-
मैं सकुशल हूँ।
मैं लिखता हूँ-

---

1. उदय प्रकाश - और अंत में प्रार्थना - थर्ड डिग्री - पृ. 85
2. वही - पृ. 87
3. वही - पृ. 85

मैं सकुशल हूँ।
दानों आश्चर्यचकित हैं।"[1]

यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि जीवन की उदासी में भी स्वप्न का उभरना, उदय जी के चिंतन की विलक्षणता का प्रमाण है। यह स्वप्न स्वस्थ जीवन निर्माण का स्वप्न है। साथ ही साथ भ्रष्ट व्यवस्था से मुक्त व्यवस्था का स्वप्न भी है।

संक्षेप में कहा जाये तो राजनीति के अत्याचारों से आम आदमी टकराते रहे हैं। वह उदासी का जीवन भुग्ता रहा है। इसलिए उनके मन में अपने अस्तित्व शून्य होने का भय उत्पन्न होता है। इस प्रकार कुत्सित राजनीतिक व्यवस्था को तोड-मरोडने की ताकत उदय जी की रचनाओं की विशेषताएँ हैं।

4.5 धार्मिक व्यवस्था

भारतीय दर्शन में धर्म का महत्व है। हमारे पुराण ग्रन्थों जैसे महाभारत एवं रामायण में चित्रित धर्म का स्वरूप आज नष्ट हो गया है। इसलिए भारतीय जनता शान्ति के लिए भटक रही है। मानव धर्म का व्यापक स्वरूप आज किसी भी धर्म में देख नहीं जा सकता। उदय प्रकाश ने अपनी चर्चित कहानी 'वारेन हेस्टिंगस का साँड' को इतिहास के नये धरातल की ओर ले जाने की कोशिश की है। वॉरेन हेस्टिग्स ने भारतीयों के बारे में जानने के लिए मिस्टर एलिस को नियुक्त किया। किसी भी राष्ट्र को अपने अधीन में रखने के पहले वहाँ की संस्कृति पर ज्ञान होना

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - व्यवस्था - पृ. 83

अवश्य ही है। मिस्टर एलिस ने भारतीय जडों को देखा, परखा और समझा। उदय प्रकाश दो सौ साल के बाद उस पर आक्रोश करते हैं - "सुनो, जनाब ऐलिस तुम लोग तो यहाँ दौलत कमाने और तिजारत करने आए हो एक-न-एक दिन तुम्हें अपने वतन लौट जाना है। लेकिन हमें तो यही रहना है। इसी मिट्टी में हम पैदा हुए, खेले-कूदे और इसी में एक दिन हमें दफन भी हो जाता है।"[1] स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले भारतीयों के मन में यही चिंता मात्र थी। आज यही वाणी लोगों को अपना मंत्र बनाना चाहिए। क्योंकि इस में वसुधैव कुटुंबकम की भूमिका निहित थी। धर्म के नाम पर हत्याएँ यहाँ चल रही है। धर्म के नाम पर लोगों को बाँटा जा रहा है। जाने अनजाने हम भी इसी रेखा में जी रहे हैं। अंग्रेज़ों ने यहाँ शासन किया, लेकिन उनके मन में धर्म के नाम पर जनता को बाँटने की आशा नहीं थी। उदय जी ने इसका जिक्र यों दिखाया - "…. तो हम यहाँ के बाशिंदे के, यहाँ के लोगों के जज़्बात को क्यों चोट पहुँचाएँ।"[2] यही चिंता अंग्रेज़ लोगों में थी। आज़ादी के बाद भारतीय संविधान में भारत को धर्मनिरपेक्ष बनाने के लिए सभी धर्मों को समाविष्ट किया गया। लेकिन धार्मिक नेता यहाँ के हिन्दुओं को काफिर कहते हैं। वास्तव में काफिर कौन है? इसका उत्तर भी उदय जी नवाब के द्वारा प्रस्तुत करते हैं - "मिस्टर ऐलिस काफिर वो हिन्दु नहीं है जो गाय की पूजा करता है। काफिर तो हम है, जो हज़रत की पाबंदी के बावजूद ये शराब पीकर कुफ्र का गुनाह कर रहे हैं।"[3]

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - वॉरन हेस्टिंग्स का साँड - पृ. 121
2. वही - पृ. 122
3. वही - पृ. 122

भारत किसी धर्म विशेष से जुडा नहीं। इसलिए भारत ने लोकतंत्र का नारा लगाया और अपनी अलग पहचान बनायी।

हमारी संस्कृति से विदेशी लोग आकृष्ट हो रहे हैं। लेकिन हम पाश्चात्य ग्लोबल संस्कृति की ओर जा रहे हैं। पाश्चात्य लोग हमारी पुराण कथाओं, दंत कथाओं, मिथक आदि पर भयभीत हैं। क्योंकि इन सारी संस्कृतिओं की जडों में बूगोल को एक छतरी के नीचे लाने की शक्ति मौजूद है। वॉरेन हेस्टिंग्स हमारी संस्कृति पर मुग्ध होकर बार बार कहते हैं - "....इस देश में इतने ग्रंथ और अभिलेख है और इतनी दंत कथाएँ और मिथक गाथाएँ मौखिक रूप में प्रचलित है कि अगर उन्हें पूरी पृथ्वी पर फैला दिया जाए तो उनकी अनगिनत परतों के नीचे यूरोप, अमेरिका, ऐशिया और आफ्रिका ही नहीं, सारे समुद्र ही ढक जाएँगे।"[1] अर्थात भारत की सांस्कृतिक महत्ता को बनाए रखने में, हिन्दू धर्म का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दू धर्म एक संस्कृति है। उन्हीं संस्कृति को सब धर्मावलंबी आत्मसात करते हुए आगे बढे तो पृथ्वी हमारे सामने नतमस्त होती है। विश्वमंगल की भावना वहाँ मौजूद है।

संविधान ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया है। यहाँ विभिन्न धर्मावलंबी रहते हैं, जैसे - सनातन धर्मी, आर्यसमाजी, ब्रह्मसमाजी, शैव, वैष्णव, जैन, बौद्ध, कबीरपंथी, दादूपंथी, निरकारी, ईसाई, सिख, मुसलमान तथा पारसी आदि। इसलिए हमारी संस्कृति में धार्मिक एकता महत्वपूर्ण

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड - पृ. 113

है। कृष्ण एवं चैतन्य महाप्रभु भारतीय संस्कृति का प्रतीक मानते हैं। कृष्ण के बारे में उदय जी बताते हैं - "बंगल में कुछ दशक पहले होनेवाले चैतन्य महाप्रभु गाँव-गाँव, गली-गली इन्हीं गोपाल कृष्ण का कीर्तन गाते, नाचते हुए घूमते थे। उनके गति और कृष्ण की कहानी दोनों का प्रभाव ऐसा था कि उत्तरपूर्व के तमाम आदिवासी और जनजातियों के लोग कृष्ण के दीवाने हो गये थे।"[1] भारतीय संस्कृति की धर्मनिरपेक्षता एक नारा नहीं कुछ मूल्यों का नाम है। हम सभी महान लोगों का गुणगान करने में हिचकते नहीं। हम चैतन्य महाप्रभु का गुणगान करते हैं। इसका भी उल्लेख 'वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड' में देखा जा सकता है। सत्रहवीं सदी में बंगाल से आकर पौरांग महाप्रभु चैतन्य ने अपने पदों और कीर्तनों से पूरे मणिपूर को गुंजा दिया था। वहाँ के आदिवासियों समेत सारे लोग वैष्णव हो गये थे। उनके नाम के अंत में शर्मा, सिंह जैसे सरनेम जुडे गए थे। सीधे सरल, भोले, भावुक पहाडों का कठिन जीवन जीते मंगोल या तिब्बत-बर्मी समूह के मेतेई और आदिवासी जैसे चैतन्य ने उनके रिक्त सांस्कृतिक जीवन को एक नयी रसमयी नदी के जल से अप्लावित कर दिया गया था। आज़ादी के समय, 1947 के बाद स्वेच्छा से जनता की माँग पर मणिपुर ने भारतीय गणराज्य का एक अंग बनने का चुनाव किया था। अर्थात उदय जी यह बताना चाहते हैं कि धर्म हमारी शक्ति है, लेकिन आज कमज़ोरी बन गयी है। हमें फिर से एक बार भारत को खोजने की जरूरत है।

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड - पृ. 718

4.5.1 धार्मिक अंधविश्वास एवं दुराचार

भारतीय संस्कृति में धर्म का महत्व पूर्ण स्थान है। आज धार्मिक व्यवस्था भ्रष्ट हो गयी। भ्रष्ट हो गयी व्यवस्था को देखकर उदय जी यों बताते हैं - "संसार की कई विचारधाराएँ दर्शन प्रणालियाँ और धर्मग्रंथ शुरू-शुरू में ईश्वर का ही अंश होने का भ्रम और दावा पेशा लोगों को मारने के लिए ही किया गया था।"[1] अर्थात अंधविश्वास सब कहीं फैला है। सामाजिक उन्नति में बाधा पहुँचाने में अंधविश्वास का महत्वपूर्ण योगदान है। वास्तव में यह स्थिति हमारा दुर्भाग्य है। अंधविश्वासों के कंपन का क्षेत्र ज़्यादा है। इसकी ओर इशारा करके उदय प्रकाश कहते हैं - "मध्यकालीन गोरिल्ला, मुफ्तखोर, पांडे और पुरोहित। इंटरनेट में जन्मकुंडली, हस्तरेखा विज्ञान, राशिफल, और जादू-टोना के वेबसाइट खुलेंगे। हिन्दी पत्रकारिता तंत्र-मंत्र, तीज-त्योहार यज्ञ-हवन और सत्ताधारियों की चाटुकारिता का मक्कार और चापलूस माध्यम बनेगी। मनुष्य अपने भविष्य को जानने के लिए उत्सुक है। इसलिए हम अंधविश्वासों के कुएँ में गिर पडते हैं। अजीब बात भी यह है कि देश को चलानेवाले बडे-बडे लोगों का संबन्ध मठाधीशों एवं फकीरों से है। क्योंकि मनुष्य अपने भविष्य को जानने के लिए उत्सुक है। पीर-फकीरों एवं मठाधीशों का दर्शन मिल जाये तो सारा पाप मिट जाता है, इस अंधविश्वास तक आ गया है हमारा समाज। 'दिल्ली की दीवार' में रामनिवास ऐसा व्यक्ति है जो पीर-फकीरों को अपना भाग्य समझते हैं। वह कहता है - "किसी से उसने यह भी कह रखा था कि मस्जिद

---

1. उदय प्रकाश -

मेठ के पास उसे ऐसे एक साधू महाराज मिले थे, जिन्होंने एक ऐसा मंत्र उसके काम में फूँका था कि सट्टे का खुलनेवाला नंबर आँख मूँदने पर उसे साफ साफ दिख जाता है। रामनिवास से कई लोगों ने वह मंत्र अपने-अपने कान में फूँकवाया लेकिन किसी को वह नंबर आँख मूँदने पर नहीं देखा।"[1] अर्थात अंधविश्वास स्वार्थि हितों का संरक्षण बन जाते हैं।

समाज में मठाधीश एवं फकीरों की शिकार हुईं अनेक औरतें। इस प्रकार की अनेक अमानवीय प्रवृत्तियाँ दिन-ब-दिन बढती जा रही हैं। इस पर उदय जी की टिप्पणी विचारणीय है - "....हिन्दुओं का जगतगुरु अपने मठ में बैठा हुआ, एक स्त्री के साथ वही सब कुछ कर रहा था, जो हज़ारों किलोमीटर दूर, कई समुद्र पार, व्हाइट हाऊस की कुरसी पर बैठा अमेरिका का राष्ट्रपति कर रहा था।"[2] अर्थात मठाधीश एवं अमेरिका का राष्ट्रपति दोनों पुरुषवर्चस्ववादी समाज का प्रतिनिधि है। स्त्रियों के ऊपर होनेवाले अत्याचार एक जैसा है।

4.5.2 ब्राह्मणवाद का विरोध

आज हिन्दुत्ववाद का बोल-बाला है। यह ब्राह्मणवाद का नया रूप है। इसी धारा में हिन्दुधर्म श्रेष्ठ है और अन्य धर्म हीन है। समकालीन रचनाओं में ब्राह्मणवाद का विरोधी स्वर देखा जा सकता है। उदय प्रकाश भी इससे दूर नहीं है। 'दद्दुतिवारी गणनाधिकारी' कहानी इसका मिसाल है। उदय जी इस कहानी के द्वारा घोषित

---

1. उदय प्रकाश - दत्तात्रेय का दुःख - दिल्ली की दीवार - पृ. 75
2. उदय प्रकाश - मैंगोसिल - पृ. 37

करते हैं कि ब्राह्मणत्व का बोध बच्चों में नहीं होता, क्योंकि बच्चों की दुनिया सबसे सुन्दर एवं निर्मल रंगीन है। वहाँ तितली जैसे अन्य बच्चों के साथ वह खेलता है। लेकिन बडे होने पर उनके दिमाग में जाति का जादू मंडराता है। उच्च-नीच का भेदभाव उत्पन्न होता है। "...तब दद्दु तिवारी में ब्राह्मणत्व नहीं पैदा हुआ था, तब तक वे 'द्विज' नहीं थे क्योंकि कई बार रमना और जैपाल के साथ नदी किनारे की रेत में उपलों-कपडों में भूनकर सोंधी-सोंधी कोतरी मछलियाँ उन्होंने नमक-मिची के साथ खायी थी। तब उनमें जाति की ऐसी भावना भी पैदा नहीं हो पायी थी। क्योंकि कई बार रमनू का जूठा अमरुद खा लेते, सरई के पत्तों से बनायी गयी चोंगी में तंबाकू भरकर एक ही चोकी से सभी वर्णों के लडके सुट्टा मरते।"[1] लेकिन बडे होने पर वह ब्राह्मण बन गया, याने कि धर्म का मुखौटा पहनाया गया। ब्राह्मण होने का गर्व उन पर आ गया। किसी भी घटना के साथ वह अपनी जाति को जोडता है। इसका भी ज़िक्र प्रस्तुत कहानी में है। उनके दफ्तर में उन पर होनेवाले अत्याचार के विरुद्ध उन्होंने एक नोटशीट तैयार किया। इसमें उन्होंने अपना नाम मात्र नहीं दिया, अपनी जाति को बडे गर्व के साथ दिया। "...एक-एक बात का उल्लेख किया और उसमें यह भी लिखा है कि एक कोरी ने कानून का पालन करनेवाले एक ईमानदार सरकारी ब्राह्मण को जूते से मारा है...।"[2] उदय प्रकाश के अनुसार हर चीज़ में परिवर्तन आता है। जातियों में विशेष रूप से इसका असर होता है - "इस देश के इतिहास में कोई भी जाति कभी स्थिर नहीं रही है। एक

1. उदय प्रकाश - दरियाई धोडा - दद्दुतिवारी गणनाधिकारी - पृ. 84
2. उदय प्रकाश - चिरिछ - दद्दुतिवारी गणनाधिकारी - पृ. 121

एशिया में वह ऊपर है, तो दूसरी में नीचे... किसी अन्य क्षेत्र में बीच में। दीज़ कास्ट्रम हैव फैशिनेटिग मोबिलिटी... डाउन वर्ड एवं अपवर्ड। जिसने वहाँ, जिस क्षेत्र में, सत्ता पर कब्ज़ा जमाया, वहाँ वह समाज में ऊपर उठ गया...। कमाल की गतिशीलताएँ है.... इन जातियों में। इसलिए वे उतनी कट्टर नहीं है... उतनी शुद्धतावादी नहीं है.... जितनी गतिशीलता उतनी विविधता... उतनी ही उदारता और उतना ही खुलापन।"[1] लेकिन परिवर्तन की आकांक्षा होने पर भी उदय जी वास्तविकता से दूर नहीं है। ब्राह्मण को वे स्थिर, स्टाटिक एवं ऊपर की जाति मानते हैं।

ब्राह्मण जाति की वास्तविकता 'पीली छतरीवाली लडकी' में यों अभिव्यक्त है - "....लेकिन एक जाति ऐसी है, जिसने अपनी जगह स्टेटिक बनाये रखती है। बिल्कुल स्थिर। सबसे ऊपर। हज़ारों साल से... वह जाति है ब्राह्मण। शारीरिक श्रम से मुक्त। दूसरों के परिश्रम, बलिदान और संघर्ष को भोगनेवाली संस्कृति के दुर्लभ प्रतिनिधि। इस जाति ने अपने लिए श्रम से अवकाश का एक ऐसा 'स्वर्गलोक' बनाया, जिसमें शताब्दियों से रहते हुए इसने भाषा, अंधविश्वासों षड्यंत्रों संहिताओं और मिथ्या चेतना की ऐसे मायालोक को जन्म दिया, जिसके ज़रिए वह अन्य जातियों की चेतना, उनके जीवन और इस तरह समूचे समाज पर शासन कर सके।"[2] पूरा समाज ब्राह्मणवाद का अड्डा हो रहा है। उदय जी की पैनी दृष्टि इसकी तलाश कर रही है। 'पीली छतरी वाली लडकी' में विश्वविद्यालय के हिन्दी

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 123
2. वही - पृ. 123

विभाग में ब्राह्मणत्व का जो फाँसीवादी स्वरूप है, उस पर विस्तार से वर्णन हुआ है। ब्राह्मणवाद या सत्ता केन्द्रित मनुवाद ने जो कुछ किया इस कहानी में प्रकाशित होने के बाद वैसा ही सब कुछ उसके लेखक के साथ भी हो रहा है। इसी एक तथ्य से उस कहानी के सामाजिक सत्य के बारे में हम अंदाजा लगा सकते हैं। बस अभी तक किसी यात्रा में 'राहुल' की तरह लेखक वध नहीं हो पाया है। लेकिन वह ही हो जाएगा। कम से कम साहित्यिक वध का प्रयत्न अपने गंडाओं से इस रचना का रक्त पोंछ रहा है। वास्तव में ब्राह्मणवाद के विरुद्ध लिखना आसान कार्य नहीं है। लेकिन उदय जी ने इस पर लिखकर अपना विरोध प्रकट किया।

4.6 न्याय व्यवस्था

कुत्सित राजनीति के परिणाम स्वरूप न्याय व्यवस्था भी भ्रष्ट हो गयी। समाज में अपराधियों का एक झुंड फैला हुआ जिसके नियंत्रण एवं निर्देश में सारा कार्यकलाप चलता है। हमारे संसद, मंत्रिगण, अफसर एवं न्यायाधीश भी इसमें शामिल हैं। उनके विरुद्ध आवाज़ उठाना खतरे का मोल लेना है। उदय प्रकाश अपनी तूलिका से उनपर आक्रमण करते हैं। उनके अनुसार उच्च न्यायालय के अधिकारी भी कालेपन में हैं। उदय प्रकाश 'मदारी का खेल' नामक कविता में न्याय व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं। सत्ता हमें संविधान के नाम पर भयभीत बनाकर हमें बोलने के लिए हक नहीं देती। क्योंकि जनता को संविधान के बारे में ज्ञान बहुत कम ही है। मानवाधिकारों का संरक्षण संविधान का कर्तव्य ही है। आज मानवाधिकारों का हनन हो रहा है-

"तो दो आदमी ही ये
दर असल
एक था जो खुद को मदारी कहता था
यह भालू है
काले वन में रहता है ठंडा पानी पीता है
और आदमी की हुई रोटी खाता है
मदारी के पास
एक पुराना धर्मग्रंथ था
जिसे वह कानून की किताब कहता था
जिसमें लिखा था
कि भालू के बारे में बोलने
भालू के बारे में कुछ भी कहने का हक
मदारी को भी है।"[1]

यहाँ 'भालू' आम जनता का प्रतीक है। उदय जी ने अदमी की तुलना भालू से शायद इसलिए की होगा कि पृथ्वी का सबसे बडा खतरनाक जीव है 'भालू'। हमारे भीतर भालू जैसी ताकत है, लेकिन हमको इसे पहचानना चाहिए। अगर हम अन्याय के विरुद्ध लडना चाहते हैं तो हमारी न्याय व्यवस्था हमारा साथ नहीं देगा। वह भी अंधकार में बैठा है। इसका खुलासा उदय जी यों करते हैं-

"कोई नहीं सोचेगा
कि सर्वोच्च न्यायालय से निकलता हुआ न्यायाधीश
काले कपडे में बार-बार

---

1. उदय प्रकाश - मदारी का खेल - पृ. 18

क्यों छुपा रहा है अपना चेहरा
कालिख क्यों जमा होती जा रही है
संसद की दीवारों पर।"[1]

इस प्रकार न्यायाधीश चेहरे को छुपा लेने के नाते अपराधी बच निकलता है। निर्दोष को पकडकर, बन्दी बनाकर, मुकुदमा चलाकर उसे फाँसी चढा दिया जाता है। भारतीय न्याय व्यवस्था में न्याय में देरी होती है। इसी देरी के कारण न्याय नहीं मिल पायेगा। स्त्रियों पर होनेवाले बलात्कार एवं अन्य शोषण के विरुद्ध होनेवाला मुकुदमा धीमी गति से चलते है। देर से प्राप्त होनेवाला न्याय, न्याय भी नहीं है। उदय जी ने इसका ज़िक्र 'कवि की पीडित खुफिया आँखें' शीर्षक कविता में किया है।

"हत्यारे ने उस औरत को मारने में दो मिनिट लगाये
उस पर दो शताब्दियों तक चलता है मुकदमा
जिसने सार्वजनिक कोष से साफ-साफ उडा लिये सैकडों करोड रुपये
उसकी सत्तर साल तक जाँच करता है जाँच आयोगा।"[1]

4.7 पुलिस व्यवस्था

सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए देश को कानून की आवश्यकता हुई। इसी कारण से समाज में पुलिस व्यवस्था की शुरुआत हुई। स्वार्थ की प्रबल

---

1. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - पृ. 58
2. वही - पृ. 49

सत्ता के कारण न्याय व्यवस्था के समान पुलीस व्यवस्था भी भ्रष्ट होने लगी। वास्तव में इन्हीं राजनीतिज्ञों के हाथ में है आज की पुलिस व्यवस्था। आज पुलीस व्यवस्था नाम मात्र की व्यवस्था ही है। इसी के कारण आम आदमी के अधिकारों की रक्षा का स्वप्न, आज भी अधूरी है।

पुलिस आंतरिक व्यवस्था बनाए रखने तथा भ्रष्टाचार पर नियंत्रण रकने का सबसे अधिक प्रभावशाली साधन है, परंतु जब यही संगठन भ्रष्ट हो जाए तो भ्रष्टाचार की समस्या कितनी बढ सकती यह कल्पनातीत है। आज पुलिस का चरित्र अत्यंत संदिग्ध है वे अपराधी तत्वों का संरक्षण दे रही हैं। लूट के माल में हिस्सा लेती हैं। जुए के अड्डे एवं वेश्यालय पुलिस के संरक्षण में चलते हैं। चोर, डाकू, जेबकतरे एवं समाज विरोधी तत्व पुलिस को अपना संरक्षक मानते हैं।

किसी भी राष्ट्र की पुलिस व्यवस्था से हम उस राष्ट्र की शासन व्यवस्था समझ सकते हैं। क्योंकि यह व्यवस्था सुशान का प्रतीक है। आज उस सुशासन में अवसरवादिता आयी। उदय प्रकाश ने पुलिस तंत्र में फैले भ्रष्टाचार को हमारे सामने पेश किया है। आज पुलिस व्यवस्था में गुंडागर्दी का प्रोत्साहन, पैसा वसूल करना, झूठे एनकउंडर आदि देखा जा सकता है। 'दिल्ली की दीवार' कहानी इसी वास्तविकता का दस्तावेज़ है। रामनिवास जैसे साधारण व्यक्ति को काला धन (Black Money) को साफ करने का मोहरा बनाता है। काला धन, काला मन, दूषित बुद्धि का जन्मदाता होता है, संतोष, धीरज, परिश्रम, नैतिकता, शांति, क्रोध

---

1. अक्षरा - मार्च-अप्रैल 2017 - पृ. 32

आदि के अभाव के कारण ही हमारा मन काला होने लगता है। काला धन की चोरी से रामनिवास और एक रामनिवास में बदल जाता है। अंत में वह मर जाता है, उनकी मृत्यु बडे बडे भ्रष्ट नेताओं के हाथ से हुई है। उदय जी बताते हैं - "आप तो जानते ही हैं कि उस रात रामनिवास जब कुलदीप उर्फ कुल्ला के साथ रिज रोड पर मारा गया, तो बिना नंबर वाली एस्टीम से सिर्फ कुछ लाख रुपये ही बरामद हुए। उसमें भी पाँच सौ के बहुतेर नोट जाली थे। जबकि असलियत यह है कि उस दीवाल की खोखल से लगभग तेरह करोड रुपये निकले थे।"[1] आज यह प्रवृत्ति दिल्ली में मात्र नहीं संपूर्ण भारत को ग्रसित हुई है। पुलिस आम आदमी से सब कुछ छीन लेती है। उदय जी कहानी से दिल्ली की दीवार तोड रहे हैं। पुलिस व्यवस्था को भ्रष्ट करनेवाले कारणों से वे जूझ रहे हैं। कहानी उस पुलिस अफसर की बात है, जिसकी निगरानी में 'ऑपरेशन रामनिवास' हुआ, वह बहुत सम्मानित और ताकतवार पुलिस अफसर है। उसकी कई कोठियाँ और फार्म हाउस है, जहाँ वह अक्सर पार्टियाँ देता रहता है। इन पार्टियों में नेता, अफसर, पत्रकार, दिग्वज बुद्धिजीवी और कई वरिष्ट साहित्यकार आते हैं और शराब पीकर उसके कालीन में लौट जाते हैं। राजधानी से निकलनेवाली अखबारों में उनका फोटो अक्सर आते है। ये लोग अब वे मिल-जुलकर एक दूसरे को ब्रांड में बदल चुके हैं। उनके भीतर से शराब की बेतहाशा गंध आ रही है और अनेक वाक्यों के नीचे मुर्गों, बकरों और निर्दोष मनुष्यों की हड्डियों का ढेर दिखाई दे रहा है। वहाँ बैठकर भ्रष्ट तरीके से

---

1. उदय प्रकाश - दत्तात्रेय का दुःख, दिल्ली की दीवार - पृ. 89

वे आमदनी बढाती हैं। जनसेवक पुलीस अन्य तरीकों को अपनाकर संपत्ति बढाने का कार्य करती है। इससे समाज में अशांति फैल रही है।

'भाई का सत्याग्रह' कहानी में अन्य अमानवीय तरीकों को अपनाकर जनता से पैसा वसूल करने का ज़िक्र है। भाई ने पहले टोल टैक्स लिया था। लेकिन दूसरी बार टैक्स न देने पर पुलिस वहाँ के स्थानीय गुंडों के साथ दुबारा जीप के पास आयी। गुंडों ने ड्राइवर से कहा - "साले पैसे क्यों नहीं देता? नौटंकी कर रहा है। लेकिन भाई ने कहा है कि हमने पिछले नाके में टैक्स आदा कर दिया है और पर्ची हमारे पास है। यह सुनकर पुलिसवालों ने उनसे कहा है - "तू क्यों बुक-बुक करता है? चुप बैठ। मैं ड्राइवर से बात कर रहा हूँ।"[1] यहाँ बोलने की स्वतंत्रता को हनन करनेवाली पुलिस व्यवस्था हम देख सकते हैं। मानवाधिकारों का हनन कानून के खिलाफ है। फिर भी भाई अपना प्रतिरोध ज़ाहिर करके यों बताते हैं - "....तुम गैरकानूनी काम कर रहे हो। पुलिस की वर्दी तुम लोगों ने पहन रखी है और ठाकू बनकर राहजनी कर रहे हो।"[2] इस प्रतिरोधी चेतना को देखकर पुलिसवालों ने भाई एवं ड्राइवर दोनों को जीप से बाहर खींच लिया। इन प्रवृत्तियों के विरुद्ध बोलना व्यक्ति की विवशता है। भाई गाँधी चिंतन से प्रभावित है। यह दुर्घटना दो अक्टूबर में हुई है। इस अवसर पर भाई का विचार सराहनीय है - "आज दो अक्टूबर है। गाँधी जयन्ती और गाँधी जी ने कहा था कि हर पुलिसवाला वर्दी के भीतर साधारण नागरिक होता है और हर नागरिक बिना वर्दी का पुलीसवाला।

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - भाई का सत्याग्रह - पृ. 98
2. वही - पृ. 99

मैं बिना वर्दी का पुलीसवाला हूँ। और मैं तुमसे कह रहा हूँ कि तुम साधारण, नागरिकों को लूट रहे हो।"[1] भाई के समान सभी लोगों को व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाकर आगे की ओर बढाना है। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो व्यवस्था उसे समझदारी पागल बनाती है। भाई व्यवस्था द्वारा निर्मित एक पागल है। पुलिस ने भाई के ऊपर यातायात रोकने, सरकारी ड्यूटी में लगे शासकीय कर्मचारियों को धमकाने और कर्तव्यपालन में बाधा डालने तथा उस इलाके में आशांति फैलाने का जुर्म कायम किया। साथ ही साथ भाभी को जबरदस्ती से पुलिस ने साफ कागद में हस्ताक्षर करवाया। कागज के ऊपर पुलिसवालों ने इस प्रकार लिखा - "पूरे होशोहवास में मैं गंगादेवी यह हफालिया बयान दर्ज करवाती हूँ कि मेरा पति पागल है।"[2] इसप्रकार के अनेक पागल हमारे चारों ओर घूम रहे हैं।

4.7.1 पुलिस एवं गुंडों का रिश्ता

आज पुलिस एवं गुंडागर्दी एक साथ चलती है। इन दोनों की मित्रता हमारे मन में असुरक्षा एवं आस्वतंत्रता का बोध उत्पन्न करती है। गुंडा लोगों की वजह से देश में कोई सुरक्षित नहीं। चाहे वह विश्वविद्यालय में हो या अन्य क्षेत्रों में हो। आज यूनिवेर्सिटी गुंडों और समाज विरोधी अपराधियों का अड्डा बन गया है। इसकी ओर इशारा करनेवाली कहानी है 'पीली छतरीवाली लडकी'। यूनिवेर्सिटी के मणिपुर वाले छात्र सपाम तोबा के साथ गुंडों ने जो हरकतें की उनका खुलासा उदय

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - भाई का सत्याग्रह - पृ. 98-99
2. वही - पृ. 100-101

जी ने विस्तार से किया। गुंडे सपाम के कमरे में भी घुसे थे। उन्होंने उसकी घडी, मनीआर्डर से आये छह सौ रुपये, चाय की एक केटली और एक थर्मस उससे छीन लीं। इतना ही नहीं उन्होंने सापाम को मज़बूर किया था कि वह नंगा होकर बिजली के जलते हीटर पर पेशाव करें। इस क्रूर प्रवृत्तियों से भयभीत होकर वह आत्महत्या करने के लिए तैयार हो जाता है। इन सारी क्रूर घटनाओं को देखकर उदय जी बताते हैं कि एक क्रूर, टुच्चा अपराधी समय है, जिसमें इस वक्त हम लोग फंसे हैं। यह ठंगों, मवालियों, जालसाजों, तस्करों और ठेकेदारों का समय है। कहानी में ऐसे कई घटनाओं का बयान हुआ है। जयप्रकाश भुइया नाम एक सीनियर छात्र ने कुछ गुंडों के खिलाफ पुलिस स्टेशन में नामजद रपट लिखाई थी, तो कुछ महीनों बाद, जब वह अपने गाँव जाने के लिए स्टेशन में ट्रेन का इंतजार कर रहा था, गुंडों ने उसे वही फ्लेटफॉर्म पर, रेलवे पुलिस के सामने, मारा था और दोनों हाथ तोड दिये थे। उसे पढ़ाई छोडनी पडी थी। वहाँ भी पुलिस स्टाचू (statue) होकर खडी हो गई थी।

विश्वविद्यालय में छात्राओं को भी गुंडा लोगों के शोषण का शिकार होना पडता है। इसका उल्लेख भी कहानी में प्राप्त है। मारीशस से आई एक छात्रा को कुछ लोकल गुंडे उठाकर ले गये थे और एक पुलिया के नीचे फेंक दी थी। इन गुंडों को राजनीतिक नेताओं, यूनिवेर्सिटी के अधिकारियों और पुलिस का संरक्षण प्राप्त है। अर्थात पुलिस एवं गुंडागर्दी दोनों मिलकर आदमी के मानवाधिकारों को छीन लेती हैं। इसका खुलासा 'पीली छतरीवाली लडकी' में हम देख सकते हैं। सापाम तोबा मणिपुरवाला है, लेकिन अपने देश में जाने से वह डरता है। क्योंकि वहाँ गया तो पि.एल.ए का मेंबर बनाकर गोली मारने की संभावना है। आज आमजनता को

अपराधी घोषित करती है हमारी व्यवस्था। इस सच्चाई को देखकर उदय पूछते हैं - "....इस वक्त हर ईमानदार, शरीफ और सीधा-सादा हिन्दुस्तानी इस राज में काश्मीरी या मणिपुरी है या फिर नक्सलवादी।"[1]

'दिल्ली की दीवार' कहानी में पुलीस गुंडों की सहायता से आम जनता से पैसा वसूल करने का ज़िक्र है। दिल्ली जैसे महानगरों में व्यवस्थित नियम नहीं है। इसलिए वहाँ की जनता एक हद तक भयभीत दिखाई पडती है। गुंडों से बचने के लिए पुलिस की सहायता वे लोग चाहते हैं। लेकिन पुलिस इन लोगों से हफ्ता वसूल करके उनकी सहायता करती है। यह एक प्रकार से विरोधाभास है। इस पर व्यंग्य यों किया गया है - "हालाँकि मोटरसाइकिल पर गश्त लगाते पुलिसवाले अक्सर उधर से निकलते रहते थे, लेकिन उनसे खतरा कम था क्योंकि उनका हफ्ता बंधा हुआ था। चायवाला रतनलाल पुलिस को पाँच सौ और संजय साढे सात सौ रुपये महीना देता था।"[2] इस प्रकार मज़दूरी करने वालों से मात्र नहीं चोरी करनेवालों से हफ़्ता वसूल किया जाता है। उदय जी दिल्ली के रचनाकार हैं, इसलिए दिल्ली का वास्तविक चित्र उनकी रचनाओं में हम देख सकते हैं।

4.7.2 चोर एवं पुलिस का संबन्ध

भारत में एक ऐसा समय था वहाँ राजनीति एवं पुलिस व्यवस्था देश की सेवा करती थी। आज वे अपना कर्तव्य भूल गये। उनकी सेवा गुंडा लोग, चोरी

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लड़की - पृ. 20
2. उदय प्रकाश - दिल्ली की दीवार - पृ. 55

करनेवाले और अन्य कूटनीतिज्ञों के साथ है। इसका खुलासा समकालीन रचनाकार करते हैं। 'साइकिल' कहानी में चोरी करनेवालों का साथ देनेवाली पुलिस का पर्दाफाश हुआ है। भालू का साइकिल की चोरी होती है। चोरी करने पर भालू की पत्नी उनसे झगडा करती है। वह कहती है - "अभी फोन करो एस.पी. को। किस दिन काम आएँगे। तुम को पता नहीं, इन पुलिसवालों को सारे चोरों की जानकारी रहती है। हफ्ता बंधा रहता है। मुझसे लिख के ले लो। हमारी साइकिल कहीं नहीं जाएगी।"[1] यह एक समझदार स्त्री का वक्तव्य है। उसका पति सुरेश उसकी बात सुनकर कई बार पुलिस स्टेशन गया। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। क्योंकि पुलिस बेचारे आदमी की पुकार नहीं सुनती। वे करोडपतियों एवं मंत्रि के रिश्तेदारों की पूजा करती है। इस तथ्य पर लिखनेवाली एक कहानी है 'थर्ड डिग्री' सुरेश के यहाँ चोरी हुई लाखों रुपये के आभूषणों की। सुरेश अच्छी तरह जानता है कि चोरी फकीरा आधा मरा होने पर भी फकीरा ने गलती कबूल नहीं की। चोरी की गई चीज़े ऊँची जगह पर है। सुरेश को पता था कि पुलिस अगर चाहे तो हर माल बरामद हो सकता है। चोरों और पुलिस के असली संबन्धों को वह बकोही में पांडे की सोहबत में जान चुका था। अतः सुरेश जब कोलियरी से कोयले की दुलाई करता था तो एस.एच.ओ. रामकिशोर पांडे वही बकोही में दरोगा था और पांडे ने ही किसी ठेकेदार से घूस लेकर कोयले की ढुलाई करवाई थी। इसलिए उसे ज्ञात होता है कि ये पुलिस और चोर मित्र हैं। दूसरे एक कथापात्र के द्वारा पुलिस का असली चेहरा प्रकट होता है। गोपाल फकीरा का ही गैग-मेंबर था। पुलिसवाले जानते थे। पुलिस इन्हें पकड नहीं पाती थी, इसलिए उनका माहवारी बाँध दिया गया

---

1. उदय प्रकाश - दत्तात्रेय का दुःख - साइकिल - पृ. 142

था। छोटे मोटे उचक्कों और पाँकटेमारों का हफ्ता बाँध दिया गया था। यह इन लोगों के लिए भी फायदेमंद था क्योंकि इससे वे फिजूल की मारपीट से बच जाते थे। सुरेश अंत में हार हो जाता है। पुलिस जानती है कि चोरी किसने और कैसे की है? सारा माल कहाँ है? किसके पास है? कौन अपराधी है और कौन अपराधी का सखा है? फिर भी वे असहाय हैं क्योंकि पुलिस गुंडों से हफ्ता लेती है और दूसरी ओर बडे बडे राजनीतिज्ञ इनके साथ है।

कुलमिलाकर कहा जाये तो पुलिस व्यवस्था का शिथिल तंत्र विभिन्न स्तरों पर चल रहा है। इसलिए समाज में कानूनी व्यवस्था डंवाडोल हो रही है और जनता असुरक्षित है। हमारे मूल्यों को बचाना चाहिए। उदय जी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं-

"बचाना ही हो तो बचाये जाने चाहिए
....अखबारों में सच्चाई, राजनीति में
नैतिकता, प्रशासन में मनुष्यता।"[1]

4.8 पत्रकार और रचनाकार की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का निषेध

समाचार पत्रों की लोकतांत्रिक व्यवस्था में अहं भूमिका है। इसको फोर्त एस्टेट माना जाता है। समाचार पत्रों को हमेशा समाज के दायित्वों को निभाने में प्रयत्नशील होना चाहिए। समाचार पत्रों के दायित्व के बारे में अनिल किशोर पुरोहित का कहना है - "मानव जाति का कल्याण करना है यह परमोद्देश्य ही देश की उन्नति का कारक होता है, राष्ट्रीय एकता सर्वांगीण शिक्षा का प्रसार-प्रचार, प्रजा

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - बचाओ - पृ. 22

का हित, प्रजा की सच्ची समस्याओं एवं शिकायतें के प्रति शासन का ध्यानाकर्षण करना, तथा न्याय का साथ देना, राष्ट्र प्रेम की भावना जनता में जागृत करना ही सही मायने में समाचार पत्र का दायित्व है।"[1] अर्थात सोद्देश्यता ही समाचार पत्र का कर्तव्य है।

उदय जी सच्चे अखबार की तलाश में है अर्थात चौथे शेर की तलाश में वे कहते हैं-

"अशोक स्तंभ का
चौथा शेर कहाँ है?
पूछा राजपथ परखडी भीड ने।"[2]

भ्रष्ट व्यवस्था में दिखाई पडनेवाली सारी कुरूतियों को जनता तक पहुँचाने के लिए पत्रकार यहाँ नहीं है। वह गायब हुआ है। उदय जी छिपे हुए पत्रकार को बुलाते हैं-

"मैं पुकारता हूँ
बीस साल की दूरी से
...था....नू...."[3]

वे व्यवस्था से डरकर अपने कर्तव्य को भूल गए हैं। उनके सामने जवाब देने के लिए अनेक सवाल घूम रहे हैं। फिर भी वे चुप्पी हैं। उदय जी इनकी चुप्पी को तोडकर बाहर आने की प्रेरणा देते हैं-

---

1. अनिल किशोर पुरोहित - आधुनिक समाचार पत्र प्रबंधन - पृ. 11
2. उदय प्रकाश - अबूतर कबूतर - चौथा शेर - पृ. 60
3. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - झाडी - पृ. 128

"मैं अपने हाथों को कभी पैट की जेब में
कभी झोले में छुपा क्यों रहे हैं इस्तरह
क्या लोगों से छुपाने के लिए आपका भी है कोई अलग गोपनीय कानून।"[1]

आज पत्रों में आनेवाली खबरें सच नहीं है। भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के अनुकूल होकर घटनाओं को उल्टे करनेवाले पत्रकार आए है। उन्हीं से वे अनुरोध करते हैं-

"आप इस खबर को उल्टा कर दीजिए
न कर सके तो इन-इन जगहों पर प्रश्नवाचक चिह्न लगा दीजिए
तीसरे पैराग्राफ की जरूरत बिलकुल भी नहीं है
सत्ता-पक्ष और विपक्ष दोनों को दीजिए बराबर स्थान।"[2]

उदय जी पत्रकार से आह्वान करते हैं कि सच्चाई को लिखना चाहिए, सत्ता के विपक्ष खडे होकर बोलना चाहिए। लाखों-लोग बीमारी में तडपकर दवा न मिलने के कारण मर रहे हैं। सरकार भी गरीबों की स्थिति देखकर कुछ भी नहीं करती। लेकिन स्वास्थ्य के लिए मंत्री लोग बहुत रुपये खर्च करते हैं। इसका खुलासा भी पत्रकार को करना है-

"लिखिये साफ-साफ कि स्वास्थ्य मंत्री जब चला रहे थे स्वास्थ्य शिवर
तो कई साल पहले मारा गया एक बूढा रोगी कह रहा था।"[3]

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - झाडी - पृ. 128
2. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - और पत्ते गिर रहे हैं इस - पृ. 55
3. वही - पृ. 55

उदय जी रचनाकार होने के कारण रचनाकारों की कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। उनकी शिकायत है कि रचनाकारों पर कुछ सालों से अखबार चुप है-

"मैं तुम्हें पिछले
तीन सालों से बताना चाहता हूँ
कि इन अखबारों में
पिछले कई वर्षों से हमारे बारे में
कुछ भी नहीं छपा।"[1]

अखबारों से जनता क्यों बाहर जा रही है, इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं-

"अखबार था, जिसकी खबरें सोडे और शराब से सील गयी थी।"[2]

आज रचनाकार जनता के साथ नहीं सत्ता के साथ है। लेकिन उदय जी जैसे लेखक सत्ता की अमानवीयता को हमारे सामने पेश करते हैं। उसी दायरे में आनेवाली कहानी है 'पॉल गोमरा का स्कूटर'। यह कहानी 'रिपोर्टिंग' शैली में लिखित है। क्योंकि वे पत्रकार हैं। आज पत्रकारिता में झूठी बातें निकल रही है। प्रस्तुत कहानी में उदय जी रचनाकारों के अवसरवाद एवं भोगवाद पर चर्चा करते हैं। साथ ही हिन्दी प्रदेश में मूल्यबद्धता और उसके प्रति मर मिटने का निश्चय कहीं बचा है, वह रामगोपाल जैसे कस्बाई कवियों में बचा है। इसलिए राजीव मेनोन ने

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - तीन वर्ष - पृ. 129
2. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - इस सदी में एक लड़की जिससे दिल्ली में मैंने प्यार किया था - पृ. 36

पॉल गोमरे को कवि सम्मेलन में भाग लेना मना किया। वह कहता है - "लिसेन पॉल, ये प्रोग्राम तुम्हारे जाने का नहीं है। इतने दिनों से तुम्हारा साथ रहकर हम तुम्हारा नेचर समझ गया है। तुम्हारी दुनिया अलग है, उन लोगों की अलग है। दे आर पावरफुल मनीड पीपल। यू आर अ पुअर, सिंपल वीक हिन्दी पोएट। डोंट गो देयर।"[1] याने कि पवर फुल लोगों के प्रति जो क्रोध है वह व्यक्तिगत तौर पर उदय जी की है। इसलिए 'मैगोसिल' कहानी में भी इसका पर्दाफाश है - "निर्लज्ज, भ्रष्टाचार, हिंसक, जातिवाद और आक्रामक अनैतिकता के भयावह फासीवाद पंजों और नाखूनों को मैंने अपने जीवन में महसूस किया। ...जिस भाषा में लिख रहा था उसमें अब हमारे जैसे लेखकों की कोई जगह नहीं बची थी।"[2] पॉल गोमरा भी व्यवस्था में पीडित कवि-पत्रकार है। वह अपनी कविताओं के ज़रिए व्यवस्था की अमानवीय प्रवृत्तियों पर पत्थर फेंकता है। उसमें गुस्से होकर व्यवस्था कहती है कि 'मारे स्साले को एक दम ठंड।' व्यवस्था का यह आदेश भारत भर मंडरा रहा है, उसमें केवल एक पॉल गोमरा मात्र नहीं, अनेक पॉल गोमरा मारे जाते हैं। इसके दृष्टान्त हैं कुलबुर्गी, पासरे, गौरी लंकेष आदि की हत्यों। उदय जी रचनाकारों को आह्वान देते हैं कि भयभीत होने की आवश्यकता नहीं, समय के अनुकूल 'भागना' है। जैसे-

"अखबार में अपनी रचना को छपाता
अपने जीवन को ज़ोर-ज़ोर से बजाता

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 160
2. उदय प्रकाश - मैंगोसिल - पृ. 139, 150

इसी दिशा को चला आता
दिखाई पड रहा है कवि
भाग भाई
भागो।"[1]

यहाँ 'भागना' से तात्पर्य यह है कि व्यवस्था के आघातों को सहते हुए जनता के लिए भागना है। अंधकार को मिटाकर भागना है। वह है सच्चा कवि या रचनाकार। वे जोर से कहते हैं-

"मैं कहता हूँ
कि वही सच्चा कवि जिसका शरीर रात में चमकता है
चद्मा की तरह
जो जानता है समुद्र के बुखार के बारे में
बजाता है संसार के सारे घटाघरों को
नियमपूर्वक
जीवन भर
लगातार।"[2]

ध्यान देने की बात यह है कि इस प्रकार के सच्चे रचनाकार या पत्रकार खतरे में हैं। भ्रष्ट व्यवस्था उन पर दबाव डालती है। तूलिका तलवार से भी खतरनाक है। इसलिए 'न्याय' तूलिका तोड देता है-

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - भागो - पृ. 142
2. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - चन्द्रमा - पृ. 25

"न्यायाधीश तोडता है कलम
न्यायविद् लेते हैं जमुहाइयाँ
दुर्दिनों में ऐसे ही हुआ करता है न्याय।"[1]

इस प्रकार करने पर भी उदय जी की आशा यह है - "...कि बचा सके तो बच जाये हिन्दी में समकालीन कविता।"[2] क्योंकि उसमें प्रतिरोधी भाषा है, समय की सच्चाई है।

4.9 निष्कर्ष

आज का युग व्यक्ति एवं व्यवस्था के सामंजस्य का युग नहीं है। वहाँ व्यक्ति एवं व्यवस्था के बीच का संघर्ष ज़ारी है। उदय प्रकाश ने व्यवस्था में पडकर अस्तित्व विहीन जनता को प्रकाश में लाने का प्रयास अपनी रचनाओं के द्वारा किया है। इस अवसर पर निलय उपाध्याय का विचार उल्लेखनीय है कि हमारे दौर के सबसे महत्वपूर्ण कथाकार है उदय प्रकाश। उनकी कहानियों के नायक को देखकर लगता है जैसे क्रूरतम समय के शिकार हो और वक्त के बडे रोलर के नीचे आकर पिस जाने के अलावा उनके पास कोई विकल्प नहीं बचा हो। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो मानवाधिकारों का हनन करनेवाली व्यवस्था हमारा रक्षक नहीं भक्षक है, इस वास्तविकता की दस्तावेज हैं उनकी रचनाएँ। भ्रष्ट व्यवस्था के अथ

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - दुर्दिनों में कविता - पृ. 113
2. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - बचाओ - पृ. 22

से इति तक काम करना आसान कार्य नहीं है। एक साहसी कार्य है। अपनी सारी रचनाओं में व्यवस्था के चंगुल में फँसकर भयानक रूप से तडपनेवाले व्यक्तियों का यदि वर्णन करते तो भी वे अंत में आकर आशावादी नज़रिए के दिखाई देते हैं। फिर भी वे डरे हुए हैं।